क्या आप जानते हैं ?

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,

पंचकूला-134112 (हरियाणा)

फोन : 0172-2567845

मोबाइल : 0-9356301618

संस्करण : 2016
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

टंकण एवं संयोजन : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. +91-94683 40497**
मुद्रक : **यू.आर.बी. प्रिंटिंग प्रेस, शैड नं. 22, रतपुर कालोनी, पिंजौर।**
मोबाइल : 9466111730, 9466112730

दो शब्द

मेरी प्रिय आत्माओ! इस संसार में 204 विभिन्न देश हैं जहाँ पर लगभग 810 करोड़ लोग रहते हैं। इन में से किसी भी दो व्यक्तियों के हाथों के अंगूठे के निशान तक नहीं मिलते हैं। अतः प्रभु की यह सृष्टि अद्‌भुत एवं अनुपम है। मैंने विगत 60 वर्षों के निरंतर अध्ययन एवं अनुशीलन के उपरांत वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, बाइबल, क़ुरान, श्रीगुरुग्रंथसाहिब, सत्यार्थप्रकाश आदि विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का सारामृत आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक को मुझे लिखने के लिये सैंकड़ों पुस्तकों का गंभीर अध्ययन करना पड़ा। इन ग्रंथों में वेद से लेकर सत्यार्थप्रकाश तक 45 ग्रंथ तो धार्मिक हैं एवं सामान्य ज्ञान भी है। प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक मैंने रखा है – 'क्या आप जानते हैं?' यह मैंने अपने प्रिय पाठकों से प्रश्न किया है। इसका यह अर्थ कदापि मत लगाइएगा कि आप कुछ नहीं जानते हैं। चाहे कोई कितना भी प्रकाण्ड पंडित क्यों न हो फिर भी वह व्यक्ति अल्पज्ञ एवं अपूर्ण ही रहेगा क्योंकि संसार का कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञ नहीं हो सकता। हाँ वह किसी विषय का बहुज्ञ हो सकता है क्योंकि केवल परमात्मा ही सर्वज्ञ एवं पूर्ण है। यदि पाठकगण नहीं जानते हैं तो धर्म, अध्यात्म, सामान्य ज्ञान के विषय में उन्हें बड़ी रोचक जानकारी होगी यदि वे प्रस्तुत पुस्तक का मन से मनन करेंगे।

मैंने इस ग्रंथ में वेद से लेकर सत्यार्थप्रकाश तक सारे ग्रंथों के 25-25 उत्तर दिये हैं और 25 उत्तर साामन्य ज्ञान के प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार मैंने 300 उत्तरों में संसार के विभिन्न 45 धार्मिक ग्रंथों एवं सामान्य ज्ञान का उत्तर प्रस्तुत करके गागर में सागर को भरने का प्रयास किया है।

अतः मैंने प्रस्तुत पुस्तक में मुख्यतः धार्मिक व सामान्य ज्ञान की ही परिचर्चा की है क्योंकि हम देखते हैं कि आजकल धार्मिक ज्ञान का व्यक्तियों में बड़ा ही अभाव है। इस पुस्तक के अध्ययन से पाठकों का रुझान धर्म की ओर बढ़ेगा। अतः धार्मिक विषयों का एक खूबसूरत

गुलदस्ता मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। कृपया आप ''क्या आप जानते हैं?'' नामक पुस्तक के फूलों को देखिए और झूम-झूमकर आनंद विभोर हो जाइए।

प्रस्तुतः पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री डॉ० जगदीश शास्त्री, सत्यपाल मोदी, रोशनलाल अग्रवाल, नरेश बंसल, जय किशन आदि ने सहयोग प्रदान किया है। अतः इन मित्रों का स्तवन न करना मेरी कृतघ्नता होगी। विशेषतः डॉ० जगदीश शास्त्री ने इस पुस्तक के संयोजन में विशेष योगदान दिया है। जिस अचिंत्य शक्ति प्रभु की असीम अनुकम्पा से मैं अपने संकल्प को मूर्तरूप दे सका उसका भी कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ। मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यन्त धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों से संदर्भ उद्धृत किये गये हैं।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है। परन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति अल्पज्ञ एवं अपूर्ण है। अतः कोई भी त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से क्षमा चाहूँगा।

धर्म पाल कपूर

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845

दिनांक : 1-12-2016

प्रस्तावना

वैदिक विद्वान् पंडित लेखराम ने कहा है कि वेद प्रचार के लिए लेखन और भाषण बन्द नहीं होने चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक 'क्या आप जानते हैं? के लेखक श्रीमान् धर्मपाल कपूर जी ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए सतत लेखन का मानो व्रत लिया हुआ है। विगत अनेक वर्ष से निरन्तर कई पुस्तकों का लेखन कर चुके हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये अपने धन से पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन और वितरण भी करते हैं। इतना ही नहीं आप कोरियर द्वारा अपने खर्चे पर भारत वर्ष के मुख्य आर्यसमाजों को निःशुल्क पुस्तकें भेजते हैं। ऐसे उदार लेखक व प्रचारक जितना अधिक आयुष्य प्राप्त करें उतना समाज का कल्याण होगा।

लेखक की प्रस्तुत पुस्तक 'क्या आप जानते हैं?' धर्मग्रन्थ वेद एवं वैदिक साहित्य सांप्रदायिक ग्रंथ क़ुरान, बाइबल, श्री गुरुग्रंथसाहब, रामायण, महाभारत आदि का सार संक्षेप में दिया गया है। वस्तुतः यह धार्मिक, साम्प्रदायिक ग्रंथों के सामान्य ज्ञान की पुस्तक है। जिसकी वर्तमान में बड़ी आवश्यकता है। इस पुस्तक से सबका ज्ञानवर्धन तो होगा ही पर नई पीढ़ी, छात्र-छात्राओं के लिये यह विशेष उपयोगी है। अतः इसका प्रकाशन और वितरण नयी पीढ़ी में अधिक से अधिक किया जाए। प्रतियोगिताओं के पुरस्कार रूप में भी बच्चों को दी जाए। इस पुस्तक के द्वारा अन्य पुस्तकों का परिचय प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें पढ़ने की इच्छा भी जागृत होगी। मूल पुस्तकें भी पढ़ी

जाएंगी । इस प्रकार 'क्या आप जानते हैं ?' से लोग बहुत कुछ जानने लगेंगे । इन सबका श्रेय प्रकाशक व वितरक को जाएगा । पर सबसे बड़ा श्रेय तो लेखक को जाएगा । हम ऐसे लेखक के सुन्दर स्वास्थ्य के साथ दीर्घजीवन की कामना करते हैं ।

शुभकामनाओं सहित !

डॉ० जगदीश शास्त्री
एम.ए., पी-एच.डी.
875, गांव किशनगढ़,
मनीमाजरा, चण्डीगढ़ ।
मो. : 0-9417621632

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और इसका मूल्य सदुपयोग है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय		पृष्ठ
1.	वेद		1
2.	उपनिषद्		11
3.	दर्शन		17
4.	रामायण		24
5.	महाभारत		32
6.	गीता		39
7.	पुराण		46
8.	बाइबल		50
9.	क़ुरान		54
10.	श्रीगुरुग्रंथसाहिब		60
11.	सत्यार्थप्रकाश		68
12.	सामान्य ज्ञान		74
	(1)	इतिहास	74
	(2)	भूगोल	76
	(3)	भारतीय राजव्यवस्था	80
	(4)	सामान्य विज्ञान	83
	(5)	सामान्य ज्ञान	86
	(6)	मिश्रित ज्ञान	91

1. वेद

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार वेद हैं। ऋग्वेद ज्ञान-काण्ड है, यजुर्वेद कर्म-काण्ड है, सामवेद उपासना-काण्ड है और अथर्ववेद विज्ञान-काण्ड है। इसलिये ऋग्वेद मस्तिष्क का वेद है, यजुर्वेद हाथों का वेद है, सामवेद हृदय का वेद है और अथर्ववेद उदर का वेद है।
2. महर्षि दयानंद के अनुसार चारों वेदों में 20416 मंत्र हैं। ऋग्वेद में 10,589 मंत्र, यजुर्वेद में 1,975 मंत्र, सामवेद में 1,875 मंत्र तथा अथर्ववेद में 5,977 मंत्र हैं।
3. ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10,589 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम अग्नि है। इसका सर्वप्रथम मंत्र निम्नलिखित है—

   ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम। होतारं रत्नधातमम्।।

   मैं उस प्रभु की जोकि संसार में अनादि, यज्ञप्रकाशक, सब ऋतुरचक, महादानी रत्ननिर्माता, सबके अग्रणीय प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता हूँ। वही मेरा एकमात्र उपास्यदेव है।
4. यजुर्वेद में 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम वायु है।
5. सामवेद में 1875 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम आदित्य है।
6. अथर्ववेद में 20 कांड, 731 सूक्त और 5977 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम अंगिरा है।
7. गायत्री मंत्र वेदों का सर्वश्रेष्ठ मंत्र है जोकि निम्नलिखित है—

   ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
   तत्सवितुर्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि।
   धियो यो नः प्रचोदयात्।। —यजुर्वेद 36.3

हे प्रभु ! आप सत्-चित्-आनंद हैं । आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफल प्रदाता है । हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप, वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदयमंदिर में ध्यान करते हैं । आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठमार्ग की ओर प्रेरित कीजिए ।

8. महर्षि दयानंद जी का सर्वप्रिय मंत्र निम्नलिखित है–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्नऽआसुव ।। –यजुर्वेद 30.3, ऋग्वेद 5.82.5

हे प्रभु ! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइये । यही कारण है कि महर्षि दयानंद जी ने यजुर्वेद के प्रत्येक अध्याय का आरंभ इसी मंत्र से किया था ।

9. छः वेदांग हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

(1) शिक्षा – इससे वेदमंत्रों का उच्चारण आदि जाना जाता है । इसके तीन अंग हैं–उच्चारण, शब्दों का स्वरूप और उनका अर्थ । इसमें पाणिनिकृत पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रंथ आते हैं ।

(2) कल्प – इसमें यज्ञ का विधान आता है । कल्प का अर्थ है बनाना-सुधार-संस्कार द्वारा निर्माण करना । इसमें साधारण यज्ञ से लेकर अश्वमेध आदि बड़े-बड़े यज्ञों के प्रकारों का वर्णन है ।

(3) व्याकरण – इसमें वैदिक व्याकरण के नियम होते हैं व्याकरण का शब्दार्थ है– पृथक्करण । इस प्रकार शब्दों की चीरफाड़ करने में सहायक शास्त्र, व्याकरण कहलाता है । इसमें पाणिनिकृत ''अष्टाध्यायी'', पतंजलि कृत ''महाभाष्य'' आते हैं ।

(4) निरुक्त – ''निरुक्त'' में कुल 14 अध्याय हैं । वस्तुतः

इसमें 12 अध्याय हैं और 2 परिशिष्ट रूप में हैं। "निरुक्त" वैदिक शब्दों की निरुक्ति है। निरुक्ति का अर्थ है व्युत्पत्ति। "निरुक्त" का सर्वमान्य मत है कि प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु के साथ अवश्य सम्बद्ध रहता है। सारे शब्द किसी न किसी धातु से निर्मित हैं। यह वैदिक शब्दों की व्याख्या करता है। यास्क मुनि कृत निघण्टु पर ही स्वयं यास्क मुनि का भाष्य "निरुक्त" कहलाता है। निघण्टु विश्व का प्राचीनतम शब्दकोष माना जाता है।

(5) छंद – जिसमें भिन्न अक्षरों की एक निश्चित् संख्या निर्धारित हो उसे छंद कहते हैं। छंदों की गिनती सात स्वरों के अनुपात से सात है। कुछ और भी छंद हैं। परन्तु वे इन्हीं सात छंदों के अन्तर्गत आते हैं। इसमें पिंगल ऋषि कृत "पिंगलसूत्र" आते हैं।

(6) ज्योतिष – इसमें भूगोल एवं खगोल विद्या आदि का उल्लेख है। गणित और विज्ञान इसका मुख्य प्रयोजन है। वस्तुतः गणित ज्योतिष वेदानुकूल है परन्तु फलित ज्योतिष नहीं, क्योंकि यह केवल निराधार एवं अनुमान मात्र है। ज्योतिष के विषय में कहा गया है–

तद्वदेतां शास्त्राणां नागानां मणयो यथा।

तद्वद्वेतां शास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम्।।

जैसे मयूरों के सिर पर शिखा, सर्पों के शिर पर मणियां होती हैं। उसी प्रकार वेदांग शास्त्रों में गणित सबसे ऊपर है। वेदांग के विषय में आचार्य भास्कर लिखते हैं–

शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी, श्रोत्र मुक्त निरुक्तं च कल्पः करौ।

या तु शिक्षास्य वेदस्यसा नासिका, पदपद्यन्दयं छंद आद्यैबुद्यै।।

व्याकरण वेद के मुख के, ज्योतिष नेत्रों के और निरुक्त श्रोत्र के समान हैं कल्प हाथों के समान एवं शिक्षा नासिका के समान

है । पांव छंद के समान हैं । ऐसा प्राचीन विद्वानों का विचार है ।

10. चारों वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया था । जैसाकि अथर्ववेद में लिखा है–

ऋचः सामानिच्छन्दांसि पुराणं यजुषासह
उच्छिष्टाज्ज ज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः ।

–अथर्ववेद 11.7.24

प्रस्तुत मंत्र में चारों वेदों के नाम एक साथ आये हैं । वे सिद्ध करते हैं कि चारों वेदों का ज्ञान एक साथ प्राप्त हुआ है न कि क्रमिक व्यवस्था से । इससे यह भी ज्ञात होता है कि वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया था अपितु प्रभु द्वारा किया गया था । महर्षि वेदव्यास ने केवल चारों वेदों की शिक्षा अपने शिष्यों, पैल, वैशम्पायन, जैमिनि एवं सुमन्तु को दी थी ।

11. महर्षि दयानंद ने 20.8.1876 ई० के दिन मंगलवार को पं० भीमसैन ज्वालादत्त आदि को **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** लिखवाना आरंभ किया था । परन्तु इसकी समाप्ति का समय अज्ञात है । यह अनुमान लगाया जाता है कि इस ग्रंथ के लिखने में लगभग पौने तीन महीने लगे थे ।

12. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में 36 अध्याय और 52 विषय हैं ।

वस्तुतः ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदों की कूंजी है और स्वामी विद्यानंद सरस्वती कृत भूमिकाभास्कर के अनुसार ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदों की कूंजी है जिसमें लेखक ने प्रस्तुत ग्रंथ की विशद् व्याख्या की है ।

पंडित भगवद्दत अपने ग्रंथ ''वैदिक वाङ्मय का इतिहास'' (द्वितीय भाग) में लिखते हैं–

दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका उनकी असाधारण योग्यता का जीवंत प्रमाण है । वेद का अभ्यास करने वाले दयानंद

सरस्वती के विचार से कितने ही असहमत हों, परन्तु भूमिका का पाठ करके वह एक बार कण्ठ से उनकी प्रशंसा करने लगते हैं ।

जैसे मैक्समूलर लिखते हैं–

We may divide the sanskrit literature beginning with the Rigveda and ending with Dayananda's of introduction to his edition of the Rigveda, his by no means uninteresting Rigveda Bhumika into two great periods.

—India what can it teach us

संस्कृत वाङ्मय का आरंभ ऋग्वेद से है और अन्त दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभूमिका पर । यह भूमिका किसी प्रकार भी अरुचिकर नहीं है ।

13. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ''वेदविषयविचार'' नामक अध्याय में 33 देवता निम्नलिखित हैं–

(1) 8 वसु – अग्नि, जल, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, द्यौः, चन्द्रमा, और नक्षत्र । क्योंकि सब पदार्थ इन्हीं में बसते हैं इसलिये इन्हें वसु कहा जाता है ।

(2) 11 रुद्र – 10 प्राण अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और 11वाँ आत्मा । क्योंकि जब ये शरीर से निकल जाते हैं तो सगे संबंधी रोते हैं इसलिये इन्हें रुद्र कहा जाता है ।

(3) 12 आदित्य – 12 आदित्य, 12 महीनों को कहते हैं क्योंकि ये जगत् के पदार्थों का आदान करते चले जाते हैं । इसलिये इन्हें आदित्य कहते हैं ।

(4) एक इन्द्र (बिजली) ।

(5) प्रजापति (यज्ञ) ।

14. वेदानुसार सृष्टि काल 4,32,00,00,000 वर्ष हैं और सृष्टिसृजन हुये 1,96,08,53,117 वर्ष हो चुके हैं । इस

प्रकार अभी 2,35,91,46,883 वर्ष शेष हैं। इसी प्रकार विभिन्न वैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों ने भी वेदों की भाँति पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष मानी है जिसका विवरण निम्नलिखित है–

The age of the earth is about two thousand million years.

—Dr. William Rose
(Outline of Modern knowledge P-152)

पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष है।

Our globe must be about two thousand million years old and can in no case be much older.

—Lecomte Dunany (Human Defriay P-48)

gekjh i`Foh yxHkx 2 vjc o"kZ iqjkuh gS vkSj fdlh Hkh voLFkk esa blls vf/kd iqjkuh ughaA

Astromomers and Mathematicians give us 2000 million years as the age of the earth as body separate from sun.

—H.G. Wels (Outline of Histroy P-19)

ज्योतिषी एवं गणितज्ञ सूर्य से पृथक् हुई पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष बताते हैं।

15. महर्षि दयानंद ने सर्वप्रथम वेदों का भाष्य हिन्दी भाषा में किया था। परन्तु दुर्भाग्यवश यजुर्वेद के 1975 और ऋग्वेद के 5,649 मंत्रों (7 मण्डल, 62 सूक्त, 2 मंत्र) तक ही वेदों का भाष्य कर पाये थे। इस प्रकार उन्होंने वेदों के 20,416 मंत्रों में से 7,624 मंत्रों का ही भाष्य किया था और शेष 12,792 वेदमंत्रों का भाष्य वे अकाल मृत्यु के कारण नहीं कर पाये। शेष ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के मंत्रों का भाष्य अन्य विद्वानों ने पूर्ण किया।

16. डॉ० सत्य प्रकाश जी ने विदेशी लेखक ग्रिफ़िथ की भाँति अंग्रेज़ी में चारों वेदों का 23 विभिन्न खंडों में भाष्य किया था।

17. अध्वर शब्द यज्ञ का पर्यायवाची है। अ का अर्थ है नहीं ध्वर का अर्थ हैं हिंसा। इसलिये यज्ञों में हर प्रकार की हिंसा निषिद्ध है। जैसे आचार्य यास्कमुनि लिखते हैं–

अध्वर इति यज्ञ नाम ध्वरिति हिंसा कर्मा तत्प्रतिषेधः।

–निरुक्त 2.7

यज्ञ का नाम अध्वर है जिसका अर्थ हिंसारहित कर्म है। यजुर्वेद में 43 स्थलों पर इसका प्रयोग हुआ है। इसलिये वेदों में यज्ञ को कामधुक् भी कहा गया है। जिसका अर्थ है–भावों एवं बाधाओं को दूर करने वाला।

18. (1) यज्ञ की आत्मा स्वाहा है इसका भाव है कि यथाशक्ति हर प्रकार का त्याग। अतः यज्ञ में इस शब्द का बार-बार प्रयोग किया गया।

(2) यज्ञ के प्राण इदं न मम है। यह मेरे लिये नहीं है। यज्ञ में इस शब्द को बार-बार प्रयोग किया गया है।

(3) यज्ञ का सार सुगंधि है जिससे चतुर्दिक सुगंधि फैले, वही यज्ञ है जिससे दुर्गंध फैले वह यज्ञ नहीं है।

(4) यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख आहुतियों की अग्नि है।

(5) यज्ञ का सार दान है।

19. वेदों में केवल यजुर्वेद में तीन स्थानों पर ओ३म् शब्द प्रयुक्त हुआ है– (1) ओम् प्रतिष्ठ–ओ३म् में समाहित हो (यजुर्वेद 2. 13), (2) ओम् क्रतोस्मर–हे कर्मशील मानव! तू ओम् का उच्चारण कर (यजुर्वेद 40.19), 3. ओम् खं ब्रह्म–ओ३म् आकाशवत् व्यापक होने से और सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम है। (यजुर्वेद 40.17)

20. सृष्टि का काल 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है। यह ब्रह्मा का एक दिन है और इतने ही वर्षों की ब्रह्मा की रात्रि होती है। इस प्रकार आत्मा का मोक्ष काल = 4,32,00,00,000×2×360×10=31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष (31,10,40,00,00,00,000) तक आत्मा मुक्ति में रहती है। मोक्षकाल को इस प्रकार भी समझा जा सकता है–4,32,00,00,000 ×2×36,000 अर्थात् एक बार सृष्टि की उत्पत्ति प्रलय में 8 अरब 64 करोड़ वर्ष का समय लगता है। इस प्रकार 36,000 बार सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय में जितना समय लगता है वह आत्मा का मोक्ष काल होता है।

21. जगत् के निर्माण के निम्नलिखित तीन कारण है?

(1) निमित्त कारण (Efficient Cause) μ यह वह कारण होता है कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। अतः इसका भाव यह है कि जगत् को बनाने वाला परमात्मा जगत्-निर्माता होने के कारण ही इसका निमित्त कारण है। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को बनाने वाला होने के कारण घड़े का निमित्त कारण है। वस्तुतः परमात्मा जगत्-निर्माण के बाद उससे अलग नहीं होता परन्तु व्यक्ति हो जाता है।

(2) साधारण कारण (Resultant Cause) – वह होता है जो बनाने में साधन हो। इसका भाव यह है कि जो बनाने में साधन एवं प्रयोजन हो। इसी प्रकार कुम्हार ने ग्राहकों के लिये घड़ा बनाया है। अतः ये आत्माएं घड़ा, दिशा, आकाश, प्रकाश आदि जगत् के साधारण कारण हैं।

(3) उपादान कारण (Material Cause) – उपादान कारण उसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने। इसका भाव यह है कि जिसका ग्रहण करके ही उत्पन्न होवे और कुछ बनाया जाये और जिसके बिना कुछ न बने। जैसे परमात्मा ने प्रकृति से जगत् को बनाया है और इसी प्रकार कुम्हार मिट्टी से घड़ा

बनाता है । अतः ये प्रकृति जगत् का उपादान कारण है । परन्तु परमात्मा का कोई उपादान कारण नहीं होता क्योंकि वह अनादि एवं अनन्त है ।

अतः जगत् निर्माता के तीन कारणों से ही वेदों का त्रैतवाद का सिद्धान्त यथार्थवादी है जिसके अनुसार परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति पृथक्-पृथक् सत्ताएं हैं । परमात्मा साक्षी है आत्मा पक्षी है और प्रकृति वृक्ष है ।

22. वेदानुसार निम्नलिखित 7 विधि एवं निषेध हैं–

विधि (मर्यादाएं) – 1. सुविचार, 2. सुदृष्टि, 3. सुश्रुति, 4. सुभावना, 5. सुभाषण, 6. सुभक्षण, 7. सुस्पर्श ।

निषेध (अमर्यादाएं) – 1. चोरी करना, 2. व्यभिचार करना, 3. शराब पीना, 4. गर्भ में बच्चे को मारना, 5. विद्वानों की हत्या करना, 6. बुरे कर्म को बार-बार करना, 7. पाप करके झूठ बोलना ।

23. गिन्नीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस के अनुसार वेद ही संसार के प्राचीनतम् एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ हैं, क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य ग्रंथ परतः प्रमाण हैं । अतः इनमें आज तक किसी भी प्रकार की मिलावट नहीं की गई है ।

24. **कः स्विदेकाकी चरति कऽउस्विज्जायते पुनः ।**
किंऽस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ।। –यजुर्वेद 23.45

(1) कौन अकेला चलता है ?

(2) कौन बार-बार उत्पन्न होता है ?

(3) हिम की औषधि क्या है ?

(4) बीज बोने एवं काटने का बहुत बड़ा स्थान कौन-सा है ?

सूर्यऽएकाकी चरति, चन्द्रमा जायते पुनः ।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ।। –यजुर्वेद 23.46

(1) सूर्य अकेला चलता है ?

(2) चन्द्रमा बार-बार उत्पन्न होता है ?

(3) आग हिम की औषधि है ?

(4) भूमि बीज बोने एवं काटने का बहुत बड़ा स्थान है ?

25. किꣳस्वित्सूर्यसमं ज्योतिः किꣳसमुद्रसमꣳसरः ।

किꣳस्वित् पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ।।

—यजुर्वेद 23.47

(1) सूर्य के समान ज्योति क्या है ?

(2) सागर के समान तालाब कौन सा है ?

(3) पृथिवी से बड़ा क्या है ?

(4) मात्रा किसकी नहीं होती है ।

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳसरः ।

इन्द्र पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ।। —यजु० 23.48

(1) सूर्य के समान ज्योति ब्रह्म (ज्ञान) है ।

(2) सागर के समान तालाब द्यौ (मानव मस्तिष्क) है ।

(3) इन्द्र (आत्मा) पृथिवी से बड़ा है ।

(4) गौ (वाणी) की मात्रा नहीं होती है ।

2. उपनिषद्

1. उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति उप+नि+षद् शब्दों से हुई है जिसका क्रमशः अर्थ है समीप + निष्ठापूर्वक श्रवण + परमात्मा की प्राप्ति। अतः उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है परमात्मा की प्राप्ति के लिये निष्ठापूर्वक श्रवण करना और ज्ञानार्जन करना।
2. महर्षि दयानंद ने केवल 11 उपनिषदों को ही आर्ष उपनिषद् माना है–
   (1) ईशावास्योपनिषद् (2) केनोपनिषद्
   (3) कठोपनिषद् (4) ऐतरेयोपनिषद्
   (5) तैत्तिरीयोपनिषद् (6) मुण्डकोपनिषद्
   (7) मांडुक्योपनिषद् (8) प्रश्नोपनिषद्
   (9) छांदोग्योपनिषद् (10) बृहदारण्यकोपनिषद्
   (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्
3. आर्ष उपनिषदों में ऋग्वेद की ऐतरेय और तैत्तिरीय उपनिषदें, यजुर्वेद की ईश, कठ, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर उपनिषदें, सामवेद की केन और छांदोग्य उपनिषदें अथर्ववेद की मुण्डक, माडूक्य और प्रश्न उपनिषदें आती हैं।
4. आर्ष उपनिषदों में सबसे छोटी उपनिषद् माण्डुक्योपनिषद् है।
5. आर्ष उपनिषदों में सबसे बड़ी उपनिषद् बृहदारण्यकोपनिषद् है। इसमें 6 अध्याय और 435 श्लोक हैं।
6. उपनिषदों की संख्या के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। अतः इनकी संख्या के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु मुक्तिकोपनिषद् जिस में राम एवं हनुमान के मध्य हुये वार्तालाप में 108 उपनिषदों की सूची दी गई है।

ईशोपनिषद्

7. सारी उपनिषदों में ईशावस्योपनिषद् को सर्वश्रेष्ठ उपनिषद् माना गया है क्योंकि इसमें परमात्मा व जगत् के स्वरूप, मानव के कर्त्तव्यों, संसार में जीने की कला, विद्या व अविद्या, भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख कैसे उपलब्ध किया जा सकता है आदि का उल्लेख किया गया है। वस्तुतः इसमें अध्ययन का निरूपण बड़े मार्मिक एवं रोचक ढंग से किया गया है। यहाँ तक कि विद्वानों का विचार है कि यदि कभी हमारा समग्र आध्यात्मिक साहित्य नष्ट भी हो जाये, परन्तु इस उपनिषद् के प्रथम 2 मंत्र भी हमारे पास सुरक्षित रह जाये, तो भी हम समूचे अध्यात्म का भवन पुनः खड़ा कर सकते हैं। सारी उपनिषदें इस उपनिषद् के प्रथम मंत्र की व्याख्या है।

कठोपनिषद्

8. उद्दालक ऋषि के पुत्र नचिकेता ने यमराज से निम्नलिखित 3 वर मांगे थे।

   (1) जब वह वापिस अपने पिता के पास मृत्युलोक में जाए तो पिता उसे पहचान ले और उसका क्रोध उस पर बिल्कुल भी न रहे।

   (2) दूसरे वर में उसने यज्ञ में अग्निचयन की विधि पूछ ली। जहाँ पर यज्ञ होगा वहाँ पर सुख, शांति एवं आनंद होगा।

   (3) तीसरे वर में उसने गूढ़तम आत्मविद्या प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की थी।

प्रश्नोपनिषद्

9. इस उपनिषद् को प्रश्नोपनिषद् इसलिये कहा जाता है कि इस में छः ऋषियों ने पिप्पलाद ऋषि से छः प्रश्न पूछे थे। उन छः ऋषियों के नाम हैं – (1) सुरेशा, (2) कबन्धी, (3) कौशल्य,

(4) गार्ग्य मुनि, (5) वेदर्भि, (6) सत्यकाम । पिप्पलाद शब्द का अर्थ है जो पिप्पल की कलियाँ खाकर ही गुजारा करता हो ।

10. शरीर में पाँच प्राण निम्नलिखित स्थानों में रहते हैं–

हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभि में समान, नाड़ियों में व्यान और सुषुम्णा नाड़ी में उदान रहते हैं ।

11. सोलह कलाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) प्राण, (2) श्रद्धा, (3) पृथिवी, (4) जल, (5) वायु, (6) आकाश, (7) ज्योति, (8) इन्द्रिय, (9) मन, (10) अन्न,(11) मंत्र, (12) तप, (13) वीर्य, (14) लोक, (15) कर्म, (16) नाम ।

मुण्डकोपनिषद्

12. अपरा विद्या (sciencetific knowledge) में वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष का ज्ञान आता है और परा विद्या (spiritual knowledge) में अक्षर ब्रह्म का ज्ञान या अध्यात्म विद्या आती है ।

13. जो व्यक्ति को सुषुप्ति में शरीर और आत्मा के संबंध के टूटने से आनंद की अनुभूति होती है। वह तो निषेधात्मक आनंद (Negative Bliss) है । परन्तु जब आत्मा शरीर में रहता हुआ शरीर से अलग होकर परमात्मा के साथ संबंध स्थापित करता है तो उससे निश्चयात्मक आनन्द (Positive Bliss) की अनुभूति होती है । यही ब्रह्मानंद है ।

ऐतरेयोपनिषद्

14. आत्मा जागृतावस्था में नेत्रों में, स्वप्नावस्था में कंठ में और सुषुप्तावस्था में हृदय में रहता है । आत्मा के विषय में ऐसा ही बृहदारण्यकोपनिषद् में भी लिखा है । इसके अतिरिक्त इसमें

आत्मा के चौथे रूप को तुरीयरूप, अनिवर्चनीय रूप और नेति-नेति भी कहा गया है जोकि अग्राह्य है ।

तैत्तिरीयोपनिषद्

15. तैत्तिरीयोपनिषद् में 3 वल्लियां हैं । (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानंद वल्ली, (3) भृगुवल्ली ।

16. तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुसार मानव शरीर में निम्नलिखित 5 कोष हैं ।

(1)	अन्नमय कोष	स्थूल शरीर
(2)	प्राणमय कोष	सूक्ष्म शरीर
(3)	मनोमय कोष	
(4)	विज्ञानमय कोष (आत्मा)	
(5)	आनंदमय कोष	कारण शरीर

17. वरुण ने अपने पुत्र भृगु को उपदेश दिया था कि ब्रह्म या आनन्द, अन्न, प्राण, मन, विज्ञान (आत्मा) में नहीं है । अपितु आनन्द परमात्मा का पर्यायवाची शब्द है । अतः आनन्द ही ब्रह्म है ।

छांदोग्योपनिषद्

18. उद्गीथ तीन अक्षरों का उत्+गी+थ से बना है । शरीर में प्राण ही उत् है क्योंकि प्राणों के होते हुए मानव हर प्रकार की उन्नति कर सकता है । अन्न धर्म है अन्न में ही सब कुछ स्थित है । वस्तुतः ओ३म् की उच्च स्वर से उपासना करने का नाम ही उद्गीथ है । उद्गीथ व प्रणव एक ही है । ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं ।

19. पाँच इन्द्रियों, वाणी, आँख, कान, मन और प्राण में प्राण सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि वाणी, आँख, कान और मन के न होने से व्यक्ति जीवित रह सकता है । परन्तु यदि शरीर से प्राण निकल जायें तो वह मर जाता है ।

20. यज्ञ के निम्नलिखित 5 अंग होते हैं–

(1) **दीक्षा :** जो व्यक्ति खाता व पीता है परन्तु इनमें रमता

नहीं । उस व्यक्ति का जीवन मानो दीक्षा का जीवन है ।

(2) **उपसद :** इसके विपरीत जो व्यक्ति खाता-पीता है और उसमें रमा भी रहता है । उसका जीवन उपसद का जीवन होता है । आम विषयी व्यक्ति ऐसा ही है । संसार में अधिकांश व्यक्ति ऐसे ही होते हैं ।

(3) **दक्षिणा :** जो व्यक्ति दान, तप, अहिंसा, सत्य का जीवन व्यतीत करता है । उसका जीवन दक्षिणा का जीवन होता है ।

(4) **स्तुत शास्त्र :** जो व्यक्ति खूब हँसता, खाता व मैथून करता है उसका जीवन स्तुत शास्त्र होता है ।

(5) **अवभृथ :** जीवन रूपी यज्ञ में व्यक्ति का मनुष्य रूप में पुनर्जन्म ही सोष्यति व असीष्ट है । सोष्यति का अर्थ है रस निचोड़ेगा और असीष्ट का अर्थ रस निचोड़ा । इसे ही अवभृथ का जीवन कहा जाता है ।

21. तत्वमसि का अर्थ है तू वह है । तेरा आत्मतत्व ही सत् है न कि तेरा शरीर । यह उपदेश अरुण ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को दिया था ।

22. अन्न और जल तीन प्रकार का होता है । खाये हुए अन्न का स्थूल भाग मल बनता है, जो मध्य भाग है वह माँस बनता है और जो सूक्ष्म भाग है वह मन बन जाता है । इसी प्रकार पिये हुए जल का स्थूल भाग मूत्र बन जाता है, जो मध्य भाग है वह रक्त बन जाता है और जो सूक्ष्म भाग है वह प्राण बन जाता है ।

बृहदारण्यकोपनिषद्

23. सत्य ही धर्म है तभी सत्य बोलने वाले के लिये कहा जाता है कि यह धर्म कहता है और धर्म बोलने वाले के लिये कहा जाता है यह सत्य कहता है । वस्तुतः धर्म और सत्य दोनों पर्यायवाची शब्द है ।

24. याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को आत्मोपदेश देते हुए कहा था अपनी आत्मा की कामना के लिये ही धन, पति, पत्नी, पुत्र, भाई, बहन आदि प्रिय होते हैं । वह आत्मा ही तो दृष्टव्य,

श्रोतव्य, मन्तव्य और निदिध्यासितव्य है । उसी को देख, सुन, जान और उसी का ध्यान कर । ऐसा करने से ही सब गांठें खुल जाती हैं । अतः आत्मा को जानो..... आत्मा को जानो ।

वस्तुतः प्यार तभी तक रहता है जब तक एक दूसरे को प्यार करते रहो । यदि ऐसा होता तो आज तक कभी भी कोई पिता अपने पुत्र को घर से निकालकर अपनी सम्पत्ति आदि से वंचित न करता अथवा पुत्र अपने पिता को घर से न निकालता । इसी प्रकार किसी भी पति-पत्नी में तलाक़ को लेकर अलग होने की भावना उत्पन्न न होती । अतः हम किसी को भी तभी तक प्रेम करते हैं जब तक हमारी आत्मा को वह संतुष्ट करता रहता है, जो भी हमारी आत्मा को दुःखी करता है तो हम उससे छुटकारा पाने के लिए तैयार हो जाते हैं । वस्तुतः जब हम एक दूसरे से प्रेम कर रहे होते हैं तो हम अपनी आत्मा से प्रेम कर रहे होते हैं ।

25. याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मविद्या का उपदेश देते हुए कहा था कि पति के प्रयोजन के लिये पति प्रिय नहीं होता परन्तु अपनी आत्मा के ही प्रयोजन के लिये वह प्रिय होता है । स्त्री के प्रयोजन के लिये स्त्री प्रिय नहीं होती परन्तु अपने ही प्रयोजन के लिए स्त्री प्रिय होती है । अतः प्रत्येक वस्तु अपने ही प्रयोजन के लिये प्रिय लगती है । अतः संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के लिये कुछ भी नहीं कर सकता । जब तक उसे दिव्यानंद या ब्रह्मानंद प्राप्त न हो जाये । संसार के सब व्यक्ति अपनी स्वार्थ के लिये ही कार्य करते हैं । परन्तु परमात्मा एवं महापुरुष केवल दूसरों के कल्याण के लिये ही कार्य करते हैं । क्योंकि परमात्मा ही आनंद है और महापुरुष को आनंदानुभूति हो चुकी है ।

3. दर्शन

1. दर्शन निम्नलिखित छः हैं जिन्हें शास्त्र या उपांग के नाम से भी पुकारा जाता है ।
   योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य दर्शन, न्याय दर्शन, वेदांत दर्शन, मीमांसा दर्शन ।
2. प्रत्येक दर्शन के लेखक और उसकी सूत्र संख्या निम्नलिखित है–

दर्शन	लेखक	सूत्र संख्या
योग दर्शन	**महर्षि पंतजलि**	**195**
वैशेषिक दर्शन	**महर्षि कणाद**	**369**
सांख्य दर्शन	**महर्षि कपिल**	**525**
न्याय दर्शन	**महर्षि गौतम**	**544**
वेदांत दर्शन	**महर्षि वेदव्यास**	**555**
मीमांसा दर्शन	**महर्षि जैमिनि**	**2644**

3. षट् दर्शनों की सूत्र संख्या 4832 है ।
4. सबसे छोटा दर्शन योग दर्शन है ।
5. सबसे बड़ा दर्शन मीमांसा दर्शन है ।
6. भारतीय दर्शनों के निम्नलिखित दो भेद हैं–
   (1) **आस्तिक दर्शन** – ये वेदानुकूल हैं और इन्हें आर्षग्रंथ माना जाता है । परन्तु इनमें भी विरोधाभास है । ये छः हैं–योग, वैशेषिक, सांख्य, न्याय, वेदांत और मीमांसा ।
   (2) **नास्तिक दर्शन** – वे वेदानुकूल नहीं है और न ही इन्हें आर्षग्रंथ माना जाता है । ये तीन हैं–चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन ।
7. योग दर्शन के अनुसार मन की अधोलिखित पाँच अवस्थाएं होती हैं–

(1) मूढ़मन :– ऐसा मन मोह-माया में फँसा रहता है और यह विवेक शून्य होता है । इसमें तमोगुण की प्रधानता होती है ।

(2) क्षिप्तमन :–ऐसा मन सुख-दुःख में फंसा रहता है और यह चंचल भी होता है और क्षिप्त दशा में डाँवाडोल रहता है । इसमें रजोगुण की प्रधानता रहती है ।

(3) विक्षिप्तमन :–इसमें मन सुख के साधनों की ओर अधिक झुका रहता है । यह मध्य की दशा है । इसमें मन दोनों ओर जाता है । इसमें सत्वगुण की प्रधानता रहती है ।

(4) एकाग्रमन :–जब बाहरी वृत्तियों से हटकर मन एक वस्तु पर एकाग्र हो जाता है । तब उसे एकाग्र मन के नाम से पुकारा जाता है ।

(5) निरुद्धमन :–सत्वगुण की अधिकता के कारण समाधि में मन अधिक उपयोगी हो जाता है । समस्त वृत्तियों एवं संस्कारों का सर्वथा निरोध हो जाने पर मन निरुद्ध कहलाता है ।

8. योग दर्शन के पाँच क्लेश अविद्या, अस्मिता (अहंभाव), राग, द्वेष, अभिनिवेशः (मृत्यु का डर) ये 5 क्लेश हैं जोकि व्यक्ति को सदा दुःखी करते रहते हैं जिससे मन की एकाग्रता नहीं होती । इनके हटने से ही मन की एकाग्रता होती है । ये सब अज्ञान से उत्पन्न होते हैं ।

अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशः क्लेशाः –2.3

9. योग दर्शन के अनुसार योग के निम्नलिखित 8 अंग हैं–

1. यम :– इसका अर्थ है संयम । ये पाँच हैं–

(1) अहिंसा :–इसका अर्थ है कभी किसी व्यक्ति का बुरा न करना । न्यायपूर्वक दण्ड देना अहिंसा है परन्तु अन्यायपूर्ण दण्ड देना हिंसा है ।

(2) सत्य :–इसका अर्थ है कि मन, वचन और कर्म में समानता होना ।

(3) अस्तेय :–इसका अर्थ है चोरी न करना । आठ प्रकार की चोरियां होती हैं ।

(4) ब्रह्मचर्य :– इसका अर्थ है इन्द्रियों पर संयम रखना ।

(5) अपरिग्रह :–अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह न करना ।

2. नियम :–ये भी पाँच प्रकार के हैं–

(1) शौच :–इस का अर्थ है शरीर एवं मन को शुद्ध रखना ।

(2) संतोष :– इसका अर्थ है जीवन निर्वाह के लिए अपेक्षित वस्तुओं के अतिरिक्त वस्तुओं की इच्छा न करना ।

(3) तप :– इसका अर्थ है कि सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि को सहन करने की शक्ति पैदा करना ।

(4) स्वाध्याय :–इसका अर्थ है आत्मनिरीक्षण एवं सद्ग्रंथों का अनुशीलन, मनन एवं आत्मसात् करना ।

(5) ईश्वरप्रणिधान :– इसका अर्थ है अपने सारे कर्मों को प्रभु समर्पण करके पूर्ण करना ।

3. आसन :– बैठने के ढंग को आसन कहते हैं । जैसे सुखासन, पद्मासन आदि ।

4. प्राणायाम : – श्वास और प्रश्वास की गति रोकने को प्राणायाम कहते हैं जैसे मुख्य प्राणायाम है रेचक, पूरक, कुम्भक आदि ।

5. प्रत्याहार :– इंद्रियों को विषय से हटाना ही प्रत्याहार कहलाता है ।

6. धारणा : किसी वस्तु पर मन को लगा लेना ही धारणा है ।

7. ध्यान : इसका अर्थ है मन की एकाग्रता । ध्यान लगाने की सरल विधि यह है कि अपनी जीभ को मत हिलने दो । इस प्रकार जब तक जीभ नहीं हिलेगी ध्यान लगा रहेगा ।

8. समाधि : विपक्षों से हटकर मन को निरुद्ध करना समाधि कहलाता है ।

10. योग दर्शन की निम्नलिखित 8 सिद्धियाँ हैं–

(1) अणिमा : अणु के समान सूक्ष्म रूप धारण कर लेना जैसे हनुमान जी ने सुरसा के मुख में और लंका में प्रवेश करते समय किया था ।

(2) लघिमा : शरीर को हल्का कर लेना । इसमें आकाश में उड़ने की शक्ति प्राप्त हो जाती है ।

(3) महिमा : शरीर को बड़ा कर लेना जैसे हनुमान जी ने सुरसा के सामने किया था ।

(4) गरिमा : शरीर को भारी कर लेना ।

(5) प्राप्ति : जिस किसी इच्छित भौतिक पदार्थ को संकल्पमात्र से ही प्राप्त कर लेना ।

(6) प्राकाम्य : बिना रुकावट भौतिक पदार्थ संबंधी इच्छा की पूर्ति अनायास हो जाना ।

(7) वशित्व : पाँचों भूतों और तज्जन्य पदार्थों का वश में हो जाना ।

(8) ईशित्व : भौतिक पदार्थों का अनेक रूपों में पैदा करने का और उन पर शासन करने का सामर्थ्य ।

11. वैशेषिक दर्शन के अनुसार 7 पदार्थ निम्नलिखित हैं–

(1) द्रव्य :– द्रव्य उस वस्तु को कहते हैं जो गुण एवं कर्म का आश्रय हो । ये द्रव्य 9 हैं । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा एवं मन ।

(2) गुण :– गुण द्रव्य में निवास करते हैं गुण का सीधा अर्थ है वस्तु में रहने वाला धर्म ये गुण संख्या में 24 माने जाते हैं ।

(3) कर्म :– कर्म का सीधा अर्थ है क्रिया । प्रत्येक आँखों के द्वारा देखे जाने वाले द्रव्य में क्रिया अवश्य रहती है ।

(4) सामान्य :– इसका अर्थ है एक प्रकार की सब वस्तुओं में रहने वाला धर्म ।

(5) विशेष :– एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से भिन्न करने वाला धर्म विशेष कहलाता है ।

(6) समवाय :– प्रत्येक वस्तु का एक दूसरी वस्तु से संबंध होता है । यह संबंध दो प्रकार का होता है– संयोग और समवाय ।

(7) अभाव :– अभाव को पदार्थ मानना इस दर्शन की एक विशेष बात हैं ।

12 . सांख्य दर्शन में आत्मा को पुरुष नाम से पुकारा गया है ?

13 . सांख्य दर्शन में 14 प्रकार की सृष्टि का वर्णन किया गया है जिन में से 8 मनुष्य जीवन से उत्तम देव श्रेणी की है । एक मनुष्य और 5 प्रकार के पशु पक्षी कीट आदि नीची श्रेणी के हैं ।

14. न्याय दर्शन के अनुसार 16 पदार्थों के विभिन्न नाम निम्नलिखित हैं–

16 पदार्थ ये हैं–प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वभास, छल, जाति, निग्रह स्थान । इन 16 पदार्थों के वास्तविक ज्ञान से मुक्ति मिलती है ।

15 . वेदांत-दर्शन में आत्मा-परमात्मा, प्रकृति, पूर्वजन्म, मरने की पीछे की अवस्थाएँ कर्म, उपासना, ज्ञान, बंध एवं मोक्ष इन 10 विषयों पर प्रकाश डाला गया है । यही इसका सार है ।

16. वेदांत-दर्शन को ब्रह्मसूत्र, उत्तरमीमांसा, शारीरिक भाष्य आदि नामों से पुकारा जाता है ।

17 . गीता में 'वेदांत' शब्द का उल्लेख 15 अध्याय श्लोक 15 में है जैसे–

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।

वेदैश्च सर्वैरहमवे वेद्यो वेदांतकृद्वेदविदेव चाहम् ।।

मैं सब के हृदय में अधिष्ठित हूँ स्मृति, ज्ञान और उनका अपाहन (अर्थात् नाश) मुझ से ही होता है तथा सब वेदों में जानने योग्य मैं ही हूँ। वेदांत का कर्ता और वेदों का जानने वाला भी मैं ही हूँ ।

18 . वेदांत दर्शन को सर्वश्रेष्ठ इसलिए माना जाता है कि शेष पांचों दर्शन हमें अस्थायी रूप से दुःख निवृत्ति करवाते हैं जबकि केवल वेदांत-दर्शन में ही आनंद प्राप्ति के साधन का प्रतिपादन है जोकि मानव जीवन का लक्ष्य है । अतः यह सर्वश्रेष्ठ दर्शन है ।

19 . मीमांसा दर्शन के 6 प्रमाण निम्नलिखित हैं–

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि ।

20. योग दर्शन का प्रथम सूत्र है–

अथ योगानुशासनम्ः ।

अब परम्परागत योग विषयक शास्त्र आरम्भ करते हैं ।

21. वैशेषिक दर्शन का प्रथम सूत्र है–

अथातो धर्म व्याख्यास्याम् ।

अब धर्म की व्याख्या करते हैं ।

22 . सांख्य दर्शन का प्रथम सूत्र है–

अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः ।

अब तीन प्रकार के दुःखों आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक का न होना ही प्राणी का मुख्योद्देश्य है । चार प्रकार के पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष है और इन में से मोक्ष सर्वोत्तम पुरुषार्थ है ।

23. न्याय दर्शन का प्रथम सूत्र है–

प्रमाण प्रमेय संशय प्रयोजन दृष्टांत सिद्धांतावयवतर्क निर्णयवादजल्प वितण्डा हेत्वाभास छलजाति निग्रहस्थानां तत्त्व ज्ञानान्नि श्रेयसाधिगमः।

प्रमेय संशय आदि 16 प्रकार के पदार्थ कहे गये हैं। न्याय में ही 16 पदार्थ माने जाते हैं। जिस साधन से प्रमाता विषयों को प्राप्त करता है उस साधन को प्रमाण और ग्रहण किये जाने वाले विषयों को प्रमेय कहते हैं। इन सब के तत्त्व को भली प्रकार जान लेने से मोक्ष की प्राप्ति सुलभ हो जाती है।

24. वेदांत का प्रथम सूत्र है–

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।

अब ब्रह्म के जानने की इच्छा करनी चाहिये।

25. मीमांसा दर्शन का प्रथम सूत्र है–

अथातो धर्म जिज्ञासा।

अब धर्म की जिज्ञासा करनी चाहिए।

4. रामायण

1. विश्वविख्यात कवि तुलसी दास द्वारा लिखित ''रामचरितमानस'' हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। उन्होंने इसका श्रीगणेश श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में रामनवमी के दिन मंगलवार दिनांक 30-3-1574 ई० को किया और इसकी इति श्रीराम के विवाह के दिन 25-11-1576 ई० को की। इस प्रकार इसको लिखने में 2 वर्ष, 7 मास और 26 दिन लगे।
2. ''रामचरितमानस'' का श्रीगणेश ''वर्णानाम'' और इति ''मानव'' शब्दों से हुई थी जिसका सार है कि सच्चा मानव कैसा होना चाहिये।
3. ''रामचरितमानस'' में 16000 शब्दों एवं 72 भाषाओं का प्रयोग हुआ है।

   नोट– संसार के किसी भी कवि ने अपने ग्रंथ में इतनी शब्दावली और भाषाओं का प्रयोग नहीं किया है।
4. रामचरितमानस में दोहा, सोरठा, चौपाई एवं छंद का प्रयोग किया गया है।
5. काण्ड का अर्थ पर्व, सन्धि, शाखा है। इस प्रकार रामकथा मंदाकिनी अनेक टेढ़े-मेढ़े रास्तों से निकलती है परन्तु करुणा का माधुर्य सम्पूर्ण कथा में ज्यों का त्यों बना रहता है। यही नहीं यह कथा विषाद, कौतुक, हास्य, आश्चर्य, भय, प्रेम, नैराश्य और तर्क से होती हुई निकलती है। लेकिन इसका मुख्य अन्तर्प्रवाह है धर्म और करुणा। जिस प्रकार व्यक्ति गन्ने को निचोड़कर केवल उसका मधुर रस ही पीता है। जिस प्रकार मधुमक्खी फूलों के रूप सौन्दर्य की परवाह न करते हुए उसका मधु ही चूसती है, जिस प्रकार पतंगा गर्मी और अपनी दुर्गति की परवाह न करते हुए अग्नि की लौ के चारों ओर मंडराता है उसी प्रकार साधक को भी अन्य विषयों पर ध्यान न देते हुये

''रामचरितमानस'' में प्रवाहित करुणरस को ग्रहण करना चाहिये ।

''रामचरितमानस'' के विभिन्न काण्डों के पढ़ने का फल और छंदों, दोहों, चौपाइयों इत्यादि की संख्या का विवरण निम्नलिखित है–

(1) बाल काण्ड (पुण्य देने वाला)	361
(2) अयोध्या काण्ड (पाप का नाश करने वाला)	326
(3) अरण्यकाण्ड (कल्याण करने वाला)	46
(4) किष्किंधाकाण्ड (विज्ञान एवं भक्ति देने वाला)	30
(5) सुन्दरकाण्ड (मोहमाया एवं मल का नाश करने वाला)	60
(6) लंकाकाण्ड (युद्ध एवं परम निर्मल करने वाला)	121
(7) उत्तरकाण्ड (प्रक्षिप्त) (प्रेम रूपी रस से परिपूर्ण)	130
कुल जोड़	**1074**

6. अरण्यकाण्ड ''रामचरितमानस'' का सर्वश्रेष्ठ काण्ड है। क्योंकि इसमें श्रीराम द्वारा लक्ष्मण को दिया गया ज्ञानोपदेश और शबरी को नवधा भक्ति का दिया हुआ उपदेश ही मुख्य है । इसके अतिरिक्त इसमें श्रीराम ने कुशलता एवं दूरदर्शिता का परिचय देकर समूचे राष्ट्र को जोड़ने का महान् कार्य किया । इस काण्ड में रावण ने सीताहरण किया और श्रीराम ने इस चुनौती को स्वीकार किया तथा स्थान-स्थान जाकर स्वयं राष्ट्र पर आई विपत्ति से लड़ने के लिये लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करके उन्हें तैयार किया । ''रामचरितमानस'' में अरण्यकाण्ड का वही महत्व है जो महाभारत में ''गीता'' और भागवत पुराण में 11वें स्कन्द का है ।

7. श्रीराम के बहनोई का नाम शृंगी ऋषि और बड़ी बहन का नाम शांता था ।

नोट -- महाराजा दशरथ ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपनी पुत्री शांता को अंग देश के राजा रोमपाद एवं वर्षिणी की दत्तक पुत्री बना दिया क्योंकि वर्षिणी कौशल्या माता की बड़ी बहन निःसन्तान थी ।

–सत्य रामायण पृ० 49-51

8. श्रीराम जिसका अर्थ है आनंददायक की पत्नी का नाम सीता जिसका अर्थ है शांति और पुत्रों के नाम लव, कुश (जुड़वां भाई) और पुत्री का नाम कविता था जिसका विवाह मुदुराई के राजकुमार साम्बु से हुआ था। —सत्य रामायण पृष्ठ 539

9. ''रामचरितमानस'' में चार वक्ताओं के लिये संवाद का आयोजन है जिनके लिये निम्नलिखित चार घाटों का निर्माण हुआ है—

(1) शिव-पार्वती संवाद — प्रथम वक्ता के रूप में शिव का नाम आता है। उनकी कथा भारत के शीशमुकु हिमालय के शिखर कैलाश पर होती है।

(2) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद — दूसरे वक्ता महर्षि याज्ञवल्क्य हैं जोकि हिमालय के बाद प्रयाग में कथा कहते हैं।

(3) कागभुशुण्डि-गरुड़ संवाद — तीसरे वक्ता कागभुशुण्डि हैं जोकि भारत के दक्षिण भाग में पहाड़ पर कथा कहते हैं।

(4) तुलसीदास-श्रोतागण संवाद — चौथे वक्ता तुलसीदास जी हैं जो घूम-घूम कर भारतवासियों को रामकथा का रसास्वादन करवाते हैं। वस्तुतः तुलसीदास जी ने स्वयं अपने मन को शांत व सुखी करने के लिए स्वयं को ही यह कथा सुनाई है। जैसे वे लिखते हैं—

स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा। —बाल० 3.7

तुलसीदास ने अपने अंतःकरण के सुख के लिये यह कथा लिखी है।

10. हनुमान (महावीर, मारुति, केसरीनन्दन, पवनपुत्र) के पिता का नाम केसरी और माता का नाम अंजना था। हनुमान के 5 भाइयों के नाम — मतिमान, श्रुतिमान, कीर्तिमान, गयमान एवं धरतीमान थे। —सत्य रामायण पृ० 351

11. महावीर वह होता है जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय पाई हो और हनु का अर्थ ठोड़ी होता है क्योंकि हनुमान जी अखण्ड

ब्रह्मचारी थे और उनकी ठोड़ी कुछ लम्बी थी । इस कारण उन्हें महावीर हनुमान कहा जाता है । वस्तुतः उस काल में पूंछ वानरों का विशेष राष्ट्रीय चिह्न था जिसको वाल्मीकि रामायण में लांगूल नाम से पुकारा गया है । अतः हनुमान जी की कोई पूंछ नहीं थी ।

12. रावण के पिता का नाम विश्रवा था और उनकी निम्नलिखित तीन रानियां थीं–

(1) बिंदुमती जिसके पुत्र का नाम कुबेर था ।

(2) कैकसी जिसके पुत्रों का नाम रावण और कुम्भकर्ण था और पुत्री का नाम शूर्पणखा था ।

(3) राका जिसके पुत्र का नाम विभीषण और पुत्री का नाम त्रिजटा था ।

13. रावण के दस सिर निम्नलिखित दस बुराइयों के प्रतीक थे–

1. क्रोध, 2. कपट, 3. क्रूरता, 4. कहर, 4 प्रतिकार, 6. अहंकार, 7. लोभ, 8. मोह, 9. वैर, 10. हठ ।

इसके विषय में ''सत्यरामायण'' में लिखा है– रावण के दस शीश नहीं थे । परन्तु उसको दस मस्तिष्कों का बुद्धिबल प्राप्त था । इस तथ्य का संकेत वह दस शीशों का मुकुट पहन कर देता था उसके दस शीश, काम, क्रोध, लोभ, वासना, घमण्ड, केन्या, मानस बुद्धि एवं अहंकार के परिचायक थे ।

कुछ विद्वानों का विचार है कि रावण 4 वेद 6 शास्त्र का प्रकांड पंडित था । अतः उनमें 10 सिरों के समान बुद्धि थीं परन्तु शुद्ध बुद्धि नहीं थी । इसी कारण उसे 10 सिरों वाला कहा जाता है ।

14. सीता का जन्म पृथ्वी से नहीं हुआ था । सीता की माता का नाम सुनैना धरणि था । धरणि पृथ्वी को भी कहते हैं । बस लोगों ने भूमि से ही सीता का जन्म करा दिया और मृत्यु काल का भी ऐसा मनगढ़ंत कथानक बना लिया कि सीता पृथ्वी से पैदा हुई थी जो सृष्टिक्रम के विरुद्ध है । इसके अतिरिक्त सीता या हल

के साथ पृथ्वी पर खिंची रेखा को भी कहते हैं । इसीलिये पृथ्वी से उत्पन्न होने की गलत धारणा लोगों ने बना ली ।

15. भरत ने मुनिवेश राम प्रेम में स्वेच्छा से स्वीकार किया था । इसके विपरीत राम ने मुनिवेश एवं तपस्वी-जीवन अपने पिता की आज्ञा से स्वीकार किया था । वस्तुतः भरत का तप, त्याग और तितिज्ञा श्रीराम से कहीं अधिक थी ।

16. महर्षि वसिष्ठ की पत्नी का नाम अरुंधती, महर्षि अत्रि की पत्नी का नाम अनसूइया, रावण की पत्नी का नाम मंदोदरी, कुंभकर्ण की पत्नी का नाम ब्रजबाला, विभीषण की पत्नी का नाम सुरसा था ।

17. सीताहरण के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

    (1) दशरथ के साथ रावण की स्थायी शत्रुता थी । उसने अनुभव किया था कि दशरथ के पिता अज के कारण ही उसके पिता विश्रवा को विशाल कौशल साम्राज्य से वंचित होना पड़ा था अन्यथा आज वह उसका स्वामी होता ।

    (2) दशरथ ने अनेक बार असुरों के विरुद्ध युद्ध में इन्द्र की सहायता की जिसके कारण उसे उतनी ही बार पराजय का मुख देखना पड़ा था ।

    (3) उसके सौतेले भाई कुबेर के प्रति प्रतिशोध की भावना ।

    (4) वेदवती द्वारा उसका अपमान, अभिशाप और फिर आत्महत्या ।

    (5) कुबेर के पुत्र नल कुबेर तथा उसकी पत्नी रम्भा द्वारा उसका अपमान ।

    (6) अन्ततः परमप्रिय बहिन शूर्पणखा का अपमान ।

    --सत्य रामायण पृ० 323

18. ब्रह्मचारिणी शबरी के माता-पिता का नाम कुसम्बी, नलुश्वर व गुरु का नाम मतंग ऋषि था ।

19. जटायु पक्षी नहीं था । अपितु वह एक वीर योद्धा था । जटायु मरीचि वंश का काश्यप गोत्री अरुण राजा का छोटा पुत्र था ।

उसकी माता का नाम श्येनी, बड़े भाई का नाम सम्पाति था। उसका वर्ण ब्राह्मण, आश्रम वानप्रस्थ और इष्ट मित्र एवं सहपाठी राजा दशरथ थे।

20. अंगद के पैर जमाने का अर्थ है कि उसे रावण ने अनेक प्रलोभन दिये थे क्योंकि वह अंगद को अपनी ओर करना चाहता था। परन्तु वह विचलित नहीं हुआ। यही उसका पैर जमाना था।

21. रावण ने क्रोधित होकर निम्नलिखित व्यक्तियों को सभा से निकाला था–
(1) विभीषण (छोटा सौतेला भाई)
(2) शक (राजदूत)
(3) प्रहस्त (पुत्र)

22. मेघनाद ने लक्ष्मण के वध के लिये निम्नलिखित तीन अस्त्रों का प्रयोग किया था–

(1) ब्रह्मास्त्र – मेघनाद ने जब देखा कि लक्ष्मण भीषण बाणों का प्रहार कर रहा है तो उस समय उसने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया फिर ब्रह्मास्त्र लक्ष्मण की परिक्रमा करके वापिस चला गया।

(2) पाशुपत अस्त्र – इसके उपरांत मेघनाद ने शिवजी द्वारा दिया हुआ पाशुपत अस्त्र का प्रयोग किया। वह भी लक्ष्मण जी के माथे को स्पर्श करके वापिस चला गया।

(3) नारायण अस्त्र – अंत में मेघनाद ने नारायण अस्त्र का प्रयोग किया। वह भी लक्ष्मण के चारों ओर परिक्रमा करके वापिस चला गया।

23. जिस समय रावण मरणासन्न अवस्था में था उस समय श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि इस संसार से नीति, राजनीति एवं शक्ति का महान् पंडित विदा ले रहा है। तुम उसके पास जाओ और उससे जीवन की कुछ ऐसी शिक्षा ले लो जो और कोई नहीं दे सकता। श्रीराम की बात मानकर लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में पड़े रावण के सिर के नजदीक जाकर खड़े हो गए।

रावण ने कुछ नहीं कहा। लक्ष्मण वापस राम के पास लौट

आये । तब श्रीराम ने कहा कि यदि किसी से ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसके चरणों के पास खड़े होना चाहिए न कि सिर की ओर । यह बात सुनकर लक्ष्मण जाकर रावण के पैरों की ओर खड़े हो गये । उस समय महापंडित रावण ने निम्नलिखित तीन बातें बताईं जो जीवन में सफलता की कुंजी है–

पहली बात यह कि शुभ कार्य जितनी जल्दी हो कर डालना चाहिए और अशुभ कार्य को जितना टाल सकते हो टाल देना चाहिए । मैं श्रीराम को पहचान न सका और उनकी शरण में आने में देरी कर दी । इसी कारण मेरी यह हालत हुई ।

दूसरी बात यह कि अपने शत्रु को अपने से कम शक्तिशाली नहीं समझना चाहिए । मैं यह भूल कर गया । मैं जिन्हें साधारण वानर और भालू समझा उन्होंने मेरी पूरी सेना को नष्ट कर दिया । मैंने जब ब्रह्मा जी से अमरता का वरदान माँगा था तब मनुष्य और वानर के अतिरिक्त कोई मेरा वध न कर सके । ऐसा कहा था क्योंकि मैं मनुष्य और वानर को तुच्छ समझता था ।

तीसरी बात यह कि सामान्यतः अपने जीवन का कोई राज हो तो उसे किसी को भी नहीं बताया चाहिए । यहाँ भी मैं चूक गया क्योंकि विभीषण मेरी मृत्यु का राज जानता था । यह मेरे जीवन की सब से बड़ी भूल थी ।

24. श्रीराम की सेना ने 5 दिन में 100 योजन लम्बे पुल का निर्माण लंका पर चढ़ाई करने के लिये किया था । राम एवं रावण का 18 दिन तक युद्ध चला था । जैसे सत्य साईं बाबा लिखते हैं–

राम-रावण युद्ध भी स्वयं में अतुलनीय युद्ध था ।
अठारह दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा ।।

–रामकथा रसवाहिनी पृ० 614

नोट –राम और रावण के युद्ध के अंतिम दिन राम ने रावण पर ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया और रावण ने उच्च ध्वनि से दोनों हाथों को उठाते हुए कहा था राम रुको, रुको ! मुझे मत मारो । मैं तुम्हारी सीता वापस कर दूँगा । परन्तु मरणासन्न रावण अशोक वाटिका की ओर दौड़ा

ताकि वह अपनी मृत्यु से पूर्व सीता का वध कर सके और जिसके वियोग में राम मर जायें। परन्तु अशोक वाटिका के द्वार पर पहुँचते ही ब्रह्मास्त्र ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसकी मृत्यु के अंतिम क्षण में उसके मुख से निकला "हे राम"।

—सत्य रामायण पृष्ठ 502

25. 25 वर्ष की आयु में श्रीराम का विवाह हुआ। विवाह के पश्चात् 12 वर्ष तक वे महलों में रहे। 37 वर्ष की आयु में वे वनों को चले गये और 14 वर्ष तक वनों में रहे। 51 वर्ष की आयु में उनको राज्यभिषेक हुआ और उन्होंने 30 वर्ष 1 मास और 20 दिन तक अयोध्या पर राज्य किया।

नोट—कई पुस्तकों में लिखा है कि श्रीराम ने 11000 वर्षों तक अयोध्या पर राज्य किया। इसका भाव है 11000 दिन अर्थात् 30 वर्ष 1 मास और 20 दिन।

—स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती कृत
मर्यादा पुरुषोत्तम राम पृ० 124

5. महाभारत

1. महाभारत के लेखक महर्षि वेदव्यास हैं ।

2. महाभारत में 18 पर्व हैं । परन्तु इसका भीष्मपर्व सर्वश्रेष्ठ पर्व माना जाता है क्योंकि इसके 25 से 42 तक 18 अध्यायों में श्रीमद्भगवद्गीता का वर्णन है जिसमें 700 श्लोक हैं । यह वेदों एवं उपनिषदों का सार है । अतः महाभारत में इसकी वही महत्ता है जो 'रामचरितमानस' में अरण्यकाण्ड की और भागवत पुराण में 11वें स्कंद की है ।

3. महाभारत में सब से छोटा महाप्रस्थानिक पर्व (17वाँ पर्व) है जिसमें 3 अध्याय और 124 श्लोक हैं और सबसे बड़ा शांतिपर्व (12वाँ पर्व) है जिसमें 329 अध्याय 14732 श्लोक हैं ।

4. महाभारत का आरम्भ में जय नाम था फिर भारत पड़ गया और इसमें 4400 श्लोक थे । इसके पश्चात् इसमें 10,000 श्लोक हो गये और इसका नाम भारत हो गया । परन्तु अब इसमें 1,07,390 श्लोक हैं और यह संसार के पुस्तकालय में विशालतम महाकाव्य है ।

5. महाराजा शांतनु की पत्नियों के नाम महारानी गंगा तथा सत्यवती थे । पुत्रों के नाम देवव्रत (भीष्म पितामह), चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य थे ।

6. सत्यवती के अनुरोध पर वेदव्यास द्वारा अम्बिका, अम्बालिका और दासी से नियोगप्रथा द्वारा समागम करके धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर का जन्म हुआ था क्योंकि ऐसा करना महारानी सत्यवती की मजबूरी तथा समय की मांग थी । महर्षि दयानंद लिखते हैं–

   व्यास के साथ नियोग होने से पाण्डु, धृतराष्ट्र और दासी के पुत्र विदुर पैदा हुए । –उपदेश मंजरी (11वाँ विषय-इतिहास)

7 जिस प्रकार धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर का जन्म नियोगप्रथा से हुआ था । उसी प्रकार से कुन्ती ने भी अपने पति पाण्डु के

अनुरोध करने से क्रमशः धर्मराज, वायु, इन्द्र के संयोग से युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन को जन्म दिया था। इसी प्रकार माद्री ने भी अश्विनी कुमार के संयोग से नकुल और सहदेव जुडवां भाइयों को जन्म दिया था। इस का मुख्य कारण यह था कि पाण्डु अत्यधिक कमजोर हो चुके थे और उनमें संतानोत्पत्ति करने की क्षमता नहीं थी। यहाँ तक कि ऋषियों ने उन्हें सहवास करने से मना भी कर दिया था। परन्तु वह अपने को नहीं रोक सके और एक बार माद्री से समागम करने पर ही उनकी मृत्यु हो गई। जैसे महर्षि दयानंद लिखते हैं–

धर्म, वायु और इन्द्र से नियोग करने पर युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन उत्पन्न हुए और इसी प्रकार अश्विनी कुमार से नियोग करने पर नकुल और सहदेव उत्पन्न हुये। इसमें धर्म, इन्द्र, वायु के नाम समझना चाहिए। स्पष्ट विदित है कि वायु के संसर्ग से पुत्र उत्पन्न नहीं हो सकता। –उपदेश मंजरी (11वाँ विषय - इतिहास)

8. धृतराष्ट्र के दो रानियाँ थीं–

गांधारी– इसके पुत्र का नाम दुर्योधन और पुत्री का नाम दुःशला था।

वैश्या – इसके पुत्र का नाम युयुत्सु था।

विशेष सूचना – वस्तुतः दुःशासन, दुर्मुख, दुष्कर्म, विकर्ण आदि केवल दुर्योधन के 101 विभिन्न नाम हैं। जिसकी सूची महाभारत के आदिपर्व अध्याय 67 एवं 167 में दी गई है। परन्तु कुछ पौराणिक भाइयों का विचार है कि गर्भ तो एक ही हुआ परन्तु वेदव्यास जी ने उसके 101 टुकड़े करके 100 पुत्र और एक दुःशला नामक कन्या घी के बर्तन में डुबो-डुबो कर बना दिये। परन्तु यह वेदविरुद्ध एवं कपोलकल्पित है।

9. जेल के पहरेदार कंस के अत्याचारों से अत्यधिक दुःखी थे। वह वासुदेव के 6 पुत्रों की हत्या कर चुका था। अतः उन्हें देवकी एवं वासुदेव के प्रति सहानुभूति हो गई। इस कारण कंस का वध करने के लिए सभी पहरेदार श्रीकृष्ण को बचाना चाहते थे। अतः श्रीकृष्ण का जन्म होते ही उन्होंने वासुदेव की हथकड़ियाँ और जेल के द्वार खोल दिये थे न कि वे स्वतः ही खुल गये थे

ऐसा अनेक पौराणिक भाई मानते हैं । जैसे कि ईश्वरी प्रसाद प्रेम लिखते हैं–

कृष्ण जन्म के समय फाटकों का स्वतः खुल जाना, कृष्ण के चरण स्पर्श से यमुनाजल का उतर जाना–ये सभी वर्णन काव्यगत अलंकार और मानव मनोविज्ञान की विविध भूमिकाओं से अधिक कोई अर्थ नहीं रखते । –शुद्ध कृष्णायन पृ० 204

10. जब द्रौपदी का चीरहरण हुआ तो उस समय श्रीकृष्ण द्वारका में शाल्व के साथ युद्ध में व्यस्त थे । वे हस्तिनापुर में थे ही नहीं । क्योंकि जब श्रीकृष्ण को पाण्डवों के वनगमन का पता चला तो वे अन्य यादवों के साथ काम्य वन में पाण्डवों से मिले और उस समय उन्होंने कहा था–

धर्मराज ! मेरे हस्तिनापुर न जाने का यह कारण है । मुझे विश्वास है कि यदि मैं वहाँ होता तो जुआ ही न होता, यदि जुआ होता तो दुर्योधन जीवित न रहता । अस्तु ! जो हुआ सो हुआ अब आप कहें मैं क्या करूँ ? स्पष्ट है कि द्रौपदी चीरहरण की कहानी सर्वथा कपोलकल्पित है । –महाभारत वनपर्व 22/42.43

11. यक्ष ने युधिष्ठिर से उसके मूर्छित भाइयों की मूर्च्छा भंग करके उनको जगाने के लिए 123 प्रश्न पूछे थे और उनमें से दो निम्नलिखित हैं–

(1) पृथ्वी से बड़ी माता है ।

(2) आकाश से ऊँचा पिता है ।

मैथिलीशरण गुप्त ने उचित ही लिखा है–

उर्वी (पृथ्वी) से गुर्वी (भारी) है माता ।

पिता व्योम (आकाश) से ऊँचा जाता ।।

12. प्रत्येक मानव परमात्मा की अद्‌भुत कृति है । अतः प्रत्येक मानव में कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है । इसी प्रकार युधिष्ठिर भाला चलाने में अत्यधिक निपुण थे । भीम शारीरिक बल एवं गदायुद्ध में सर्वश्रेष्ठ थे । अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे, नकुल सौंदर्य में सर्वश्रेष्ठ थे और सहदेव सहनशीलता में सर्वश्रेष्ठ थे ।

13 . महाभारत युद्ध के मुख्य कारण निम्नलिखित थे–

(1) दुर्योधन का युधिष्ठिर सभा भवन में कुछ व्यक्तियों, भीमसेन आदि द्वारा हँसी उठाना और अपमान करना ।

(2) दुर्योधन का हठ एवं अभिमान ।

(3) धृतराष्ट्र का पुत्र मोह और महत्वकांक्षा ।

(4) महारानी कुन्ती का अपने ज्येष्ठ पुत्र कर्ण के विषय में मौन रहना ।

(5) दुर्योधन शकुनि आदि पांडवों के लाक्षागृह द्वारा मारने का षडयंत्र रचना और जुए द्वारा छल कपट ।

(6) कर्ण का अपने मित्र दुर्योधन का अंतिम क्षण तक साथ देना ।

(7) श्रीकृष्ण का पाण्डवों को समय-समय पर युद्ध के लिये प्रोत्साहन एवं सहायता करना। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण द्वारा महाभारत के युद्ध से पूर्व गीतोपदेश देकर अर्जुन का मोह भंग करके ज्ञान प्राप्ति करवाना और पुनः युद्ध के लिये तैयार करना । क्योंकि श्रीकृष्ण अधर्म का विनाश करके धर्म की स्थापना करना चाहते थे ।

14. कौरवों के सर्वप्रथम भीष्म पितामह प्रधान सेनापति 10 दिन तक युद्ध करते रहे । इसके पश्चात् क्रमशः द्रोणाचार्य, कर्ण, शल्य और अश्वत्थामा कौरवों के सेनापति नियुक्त हुये थे । धृष्टद्युम्न को पांडवों के सर्वप्रथम सेनापति नियुक्त किये गये थे और सारे युद्ध में वही पांडवों के प्रधान सेनापति बने रहे । परन्तु युद्ध के अंतिम दिन जब वे अपने शिविर में सो रहे थे तो अश्वत्थामा ने उन्हें जगाकर उनका वध कर दिया ।

15. शल्य ने राजकुमार उत्तर का और भीष्म पितामह ने राजकुमार श्वेत का वध युद्ध के पहले ही दिन कर दिया था । अभिमन्यु का वध 6 कौरव महारथियों ने मिलकर किया था । घटोत्कच का

वध कर्ण ने, द्रोणाचार्य ने विराट का एवं द्रुपद का वध किया था। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न और द्रौपदी के पांचों पुत्रों का वध किया था।

इसी प्रकार युधिष्ठिर ने शल्य का, भीम ने दुःशासन एवं दुर्योधन का, अर्जुन ने जयद्रथ एवं कर्ण का, सहदेव ने शकुनि का और धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य का वध किया था।

16. महाभारत युद्ध 18 दिन तक चला था और इसमें लगभग 20 लाख योद्धा, 10 लाख घोड़े, 4 लाख हाथी और 4 लाख रथ काम आये थे।

17. इस युद्ध में पांच पाण्डव—युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव, कृष्ण, सात्यकि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा, युयुत्सु योद्धा ही बचे थे।

18. भीष्म पितामह 58 दिन तक बाणों की शय्या पर पड़े रहे थे क्योंकि उन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। अतः उन्होंने अपनी इच्छानुसार उत्तरायण में प्राण त्यागे थे।

19. श्रीकृष्ण के जीवन की उपलब्धियाँ निम्नलिखित थीं—

    (1) श्रीकृष्ण ने गीता जैसा दार्शनिक ग्रंथ दिया जोकि संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है।

    (2) श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध में पांडवों को विजय दिलवाई थी। यदि वे अपनी राजनीति चातुर्य का प्रयोग न करते तो पांडव विजयी नहीं हो सकते थे।

    (3) उस समय भारतवर्ष में 2340 छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य थे जिन में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश आदि भी भारत में शामिल थे जोकि अब स्वतंत्र राष्ट्र बन चुके हैं। श्रीकृष्ण ने इन राज्यों को 9 भागों में बाँट कर एक केन्द्रीय शासित प्रदेश हस्तिनापुर और 8 माण्डलिक बनाये। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने उन्हें संगठित

कर महाराज युधिष्ठिर के झण्डे के नीचे लाकर खड़ा कर दिया और उन्होंने इस प्रकार चक्रवर्ती राज्य प्रदान किया ।

(4) श्रीकृष्ण ने अत्याचारों एवं पापों का नाश करके धर्म की स्थापना की ।

20. महाराज युधिष्ठिर ने महाभारत युद्ध के पश्चात् 36 वर्ष, 8 मास और 25 दिन तक भारतवर्ष पर राज्य किया ।

21. पांडवों ने 12 वर्ष में 1 वर्ष द्वैतवन, 5 वर्ष काम्यक वन में, 1 वर्ष इतस्ततः नदियों पर, 4 वर्ष गंधमादन पर्वत पर, 1 वर्ष थामुन पर व्यतीत किया ।

22. युधिष्ठिर कंक नामक ब्राह्मण, भीम बल्लब नामक रसोइया, अर्जुन बृहन्नला नामक नपुंसक, नकुल ग्रंथिका नामक अश्वबंधक, सहदेव तंत्रिपाल नामक गोपालक, द्रौपदी महारानी सुदेषणा की सैरंध्री बनकर अज्ञातवास में रहे ।

23. द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के नाम प्रतिविन्ध्य, सुतसोम, श्रुतकीर्ति, शतनीक, श्रुतसेन थे ।

24. महाभारत युद्ध के बाद जब पांडव जीत गए और युधिष्ठिर राजा बन गये तब युधिष्ठिर कुरुक्षेत्र में तीरों की शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह से राजनीति की शिक्षा लेने पहुँचे । भीष्म ने युधिष्ठिर को जितनी भी बातें बताई वे आज भी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं । जब युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा कि मनुष्य को किन आदतों से दूर रहना चाहिये तो भीष्म ने उन्हें निम्नलिखित 9 आदतों के बारे में बताया जो इंसान के पतन का कारण बनती है ।

(1) **जुआ** – जुआ मनुष्य की सबसे बुरी आदतों में से एक माना जाता है । जुआ खेलने वाला जब इसका आदी हो जाता है तो वह किसी अन्य विषय के बारे में सोच ही नहीं सकता ।

(2) **शिकार** – शिकार अर्थात् जीव हत्या नहीं करनी चाहिए ।

(3) **दिन में सोना** – दिन में सोना आलस की निशानी है ।

आलसी मनुष्य घर के प्रति अपनी जिम्मेदारियां कभी पूरी नहीं कर सकता ।

(4) **दूसरों की निन्दा** – दूसरों के कार्यों में दोष ढूंढना, दूसरों की बुराई करना कई लोगों की आदत बन जाती है ।

(5) **स्त्रियों में आसक्ति** – जिस मनुष्य को स्त्रियों में आसक्ति हो जाती है वह हर समय उनके आगे-पीछे घूमता रहता है ।

(6) **शराब पीना** – शराब पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । मनुष्य को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता । ऐसा व्यक्ति परिवार और मित्रों को कष्ट पहुँचाता है ।

(7) **नाचना-गाना** – जिस मनुष्य को नाचने गाने की आदत लग जाती है वह हर समय यही काम करता रहता है ।

(8) **बाजा बजाना** – वाद्य यंत्र बजाना कई लोगों का शौक होता है । एक हद तक तो यह प्रतिभा सभी को अच्छी लगती है । लेकिन हद पार हो जाने से यह आदत परेशानी पैदा कर देती है ।

(9) **व्यर्थ घूमना** – कई लोगों को बिना मतलब के घूमने की आदत होती है जिसकी वजह से वे हर समय कहीं न कहीं भटकते ही रहते हैं ।

25. महाभारत से हमें यह शिक्षा मिलती है कि कौरवों और पांडवों के सर्वनाश का कारण जुआ बना और यदुवंशियों के सर्वनाश का कारण शराब बनी । अतः जुआ और शराब के पास भूलकर भी नहीं जाना चाहिए । अतः मैं संसार के सभी जुआरियों और शराबियों से सविनय अनुरोध करता हूँ कि वे इन व्यसनों को त्याग दें ।

6. गीता

1. श्रीमद्भगवद्गीता के लेखक महर्षि वेदव्यास थे और महाभारत के भीष्म पर्व के 25वें अध्याय से 42वें अध्याय तक जो 18 अध्याय हैं उन्हें ही श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से पुकारा जाता है ।

2. गीता में 700 श्लोक हैं और निम्नलिखित पात्रों ने अग्रलिखित श्लोक बोले हैं–

	पात्र	श्लोक
(1)	धृतराष्ट्र	1
(2)	संजय	41½
(3)	अर्जुन	83½
(4)	श्रीकृष्ण	574
	कुल जोड़	**700 श्लोक**

3. आदि शंकराचार्य ने गीता पर सर्वप्रथम भाष्य लिखा और इसके गुणों एवं महत्ता के कारण ही इस पर सबसे अधिक भाष्य लिखे गये ।

4. गीता का 12वाँ और 15वाँ अध्याय सबसे छोटा है जिनमें केवल 20-20 श्लोक हैं और सब से बड़ा 18वाँ अध्याय है जिसमें 78 श्लोक हैं ।

5. गीता में श्रीकृष्ण ने लगभग 300 बार 'मैं' 'मेरा' 'मुझे' सर्वनामों का प्रयोग योगयुक्त अवस्था में अपने लिये न करके परमात्मातत्व का वर्णन किया है । इसका यह अर्थ नहीं कि वे स्वयं परमात्मा थे या परमात्मा के अवतार थे । जैसे वैष्णव भाई मानते हैं । परन्तु वे महापुरुष थे जैसे गुरुदत्त लिखते हैं–

   वहाँ कृष्ण ने कहा कि गीता का प्रवचन मैंने योगयुक्त अवस्था में किया था । उस समय मैं ऐसे कह रहा था जैसे मानो परमात्मा मुझ में बैठकर कह रहा हो ।

   इस प्रकार जहाँ-जहाँ कृष्ण ने मैं, मेरा इत्यादि शब्द प्रयोग किए हैं,

वहाँ उसका अभिप्राय परमात्मा का ही है। अतः मेरे परायण का अर्थ ईश्वर परायण समझना चाहिए। —श्रीमद् भगवद्गीता पृष्ठ 56

6. कृष्ण का अर्थ है—आकर्षण और अर्जुन का अर्थ है—शुद्ध।

7. गीता में 7, 10, 11, 12 अध्याय पूर्णतः प्रक्षिप्त हैं। इसके अतिरिक्त किसी अध्याय में 5 किसी अध्याय में 10 श्लोक प्रक्षिप्त हैं। शेष गीता शुद्ध है। फिर भी यह ग्रंथ भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है।

8. गीता में 7 बार ओम् एवं 84 बार योग शब्द प्रयुक्त हुआ है।

9. गीता में कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग का सुन्दर समन्वय हुआ है। पहले 6 अध्यायों में कर्मयोग का, दूसरे 6 अध्यायों में भक्तियोग का और तीसरे 6 अध्यायों में ज्ञानयोग का प्राधान्य है। मानव जीवन की यात्रा के लिए तीनों का समन्वय आवश्यक है। गीता में कर्मयोग का अर्थ है—शरीर को संसार की निष्काम सेवा में समर्पित करना। ज्ञानयोग का अर्थ है—आत्मा में स्वयं को समर्पित कर देना और भक्ति योग का अर्थ है—स्वयं को मन से परमात्मा में समर्पित कर देना। इन तीनों के पूर्ण हो जाने पर अभिमान का नाश हो जाता है। इसके विषय में डॉ० नरेन्द्र मदान लिखते हैं—

क्योंकि अहंकार का गिरना ही आत्मसाक्षात्कार है। गीता में कर्म, भक्ति और ज्ञान की अलौकिक त्रिवेणी लहरा रही है। इसके पद-पद में अलौकिक अर्थ है। अनन्य भाव से इसका अध्ययन करने से मन के कपाट खुल जाते हैं।

इसी प्रकार योग ऋषि स्वामी रामदेव जी भी लिखते हैं—

गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, दिव्ययोग चारों ही है।

—श्रीमद्भगवद्गीता —गीतामृत पृ० 22

अतः जगद्गुरु कृपालु जी महाराज लिखते हैं—

कर्म ज्ञान अरु योग के जो भी फल श्रुति गाये ।
अनायास बिनु मांगे, भगत सफल फल पाये ।।

—भक्तिशतक दोहा 64

कर्म, ज्ञान एवं योग का जो भी फल शास्त्रों में बताया है वह सब बिना मांगे ही भक्ति से प्राप्त हो जाता है ।

वस्तुतः कर्म के बिना ज्ञान असम्भव है । बिना ज्ञान के भक्ति अधूरी है और बिना भक्ति के ज्ञान लंगड़ा है । ये तीनों एक दूसरे के पूरक हैं । अतः जीवन में सफलता की प्राप्ति के लिये तीनों का सुन्दर समन्वय आवश्यक है परन्तु कर्म स्थूल अहंकार है और ज्ञान सूक्ष्म अहंकार है और भक्ति निहंकार है । वस्तुतः कर्म की अनाशक्ति से, ज्ञान की समता से, भक्ति की समर्पण से, इच्छा की व्याकुलता से, तप की त्याग से और दान की उदारता से परख होती है । अतः प्रभु अनुभूति केवल अनन्य भक्ति से ही होती है ।

10. प्रस्थानत्रयी का अर्थ है किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये चल पड़ना । आध्यात्मिक जगत् में व्यक्ति का मुख्योद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति माना गया है । इसलिये यहाँ प्रस्थान का अर्थ हुआ प्रभु प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ना । प्रभुप्रदत्त वेदज्ञान के उपरांत प्रभुप्राप्ति का दिशाबोध देने वाले मुख्य रूप से उपनिषद् गीता एवं वेदांतदर्शन है । इसीलिये इन्हें प्रस्थानत्रयी के नाम से पुकारा जाता है । इस प्रकार आर्यसमाजियों की प्रस्थानत्रयी में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कारविधि के ग्रंथ आते हैं ।

11. यजुर्वेद के 40वें अध्याय के दूसरे मंत्र या ईशोपनिषद् के भी दूसरे निम्नलिखित मंत्र पर सारी गीता आधारित है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

इस संसार में निष्काम कर्मों को करते हुए मनुष्य को सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए । यही एक साधन है जिसके द्वारा तुम मनुष्य में कर्म लिप्त न होंगे । इसके अतिरिक्त और

कोई भी उपाय नहीं है ।

12. कर्मयोग (निष्काम कर्म) शब्द गीता का अपना घड़ा हुआ शब्द है । मनुष्य की वृत्तियाँ त्रिगुणात्मक होती हैं । उनके आधार पर उसका चिन्तन भी निम्नलिखित तीन प्रकार का होता है–

(1) तमोगुणी मनुष्य का चिन्तन होगा कि फल मिलेगा तो कर्म करूँगा । यदि फल नहीं मिलेगा तो कर्म नहीं करूँगा ।

(2) रजोगुणी मनुष्य का चिन्तन होगा कि कर्म तो करूँगा किन्तु इसका फल अवश्य मिलना चाहिए जो उसके हाथ में नहीं है ।

(3) सत्वोगुणी मनुष्य का विचार होता है कि कर्म करूँगा परन्तु फल परमेश्वर की न्यायव्यवस्था के अनुसार जो भी मिलेगा वह उसे स्वीकार करेगा । इसके विषय में स्वामी विवेकानंद लिखते हैं –

गीता का केन्द्रीय भाव है कि निरंतर कर्म करते रहो, परन्तु उसमें आसक्त मत रहो ।

13. स्थितप्रज्ञ व्यक्ति अपनी सारी इच्छाओं का त्याग कर देता है और बाहर के विषयों पर आश्रित न रहकर स्वयं में ही संतुष्ट रहने लगता है ।

14. जो व्यक्ति वित्तैषणा, पुत्रैषणा एवं लोकैषणा पर विजय प्राप्त कर लेता है । वही ब्रह्म स्थिति को प्राप्त हो जाता है ।

15. मनुष्य की आँखों का गुण रूप है और उसे सुरूप से राग हो जाता है और कुरूप से द्वेष । कानों को अच्छे एवं सुरीले शब्दों से राग हो जाता है और कटु शब्दों से द्वेष । अतः प्रत्येक विषय में राग-द्वेष का भाव रुचि एवं अरुचि है ।

16. गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म शब्दों का रहस्य निम्नलिखित है–

(1) कर्म-अंहकार = भक्ति

(2) कर्म + अहंकार = ज्ञान

(3) ज्ञान + भक्ति = कर्म

अतः चाहे व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु उस स्वतंत्रता में भी परमेश्वर की न्यायव्वस्था रूपी परतंत्रता निहित है। अभिमान एवं मोह-माया की भावना से ग्रस्त मानव सदा अनेक प्रकार की चिंताओं में पड़ा रहता है।

17. गीता में निम्नलिखित चार प्रकार के भक्तों का वर्णन है–

(1) **आर्त्त भक्त** – जो किसी दुःख के कारण परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(2) **अर्थार्थी भक्त** – जो धन एवं किसी स्वार्थपूर्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(3) **जिज्ञासु भक्त** – जो केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(4) **ज्ञानी भक्त** – जो केवल प्रभु से निःस्वार्थ भाव से प्रार्थना करते हैं। क्योंकि उनकी कोई माँग नहीं होती है। अतः वे ही प्रभु के सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं।

18. श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भेद में अभेद, अनेकता में एकता, खण्डों में अखंड को विराट् रूप दिखाया है जिसके कारण अर्जुन को चतुर्दिक रूप भगवान् ही भगवान् दिखने लगे थे। यह पृथ्वी सूर्य, चन्द्र, तारे जगत् के जीव-जंतु सब एक विराट् पुरुष के रूप में प्रकट हुआ और हर एक वस्तु उसी विराट् पुरुष का अंग दिखने लगी। इस प्रकार इस दिव्य दृष्टि से उसे यह नाना-रूप जगत् एक ही विराट् रूप पुरुष का जीवित शरीर दिखाई देने लगा। अतः डॉ० श्रीराम आर्य अपनी पुस्तक ''गीता-विवेचन'' में लिखते हैं–

गीता का विश्वरूप दर्शन वाला अध्याय 11 तो साक्षात् मैस्मरेज़म

दिखाने वालों के सामन बाजीगरों का सा मेल है जो पात्र को सम्मोहित करके कलाकार उसे दिखाया करते हैं ।

—गीता का देवतावाद और विश्वरूप दर्शन रहस्य अध्याय 10 पृ० 135

वस्तुतः गीता एक साम्प्रदायिक पुस्तक है जिसका मुख्योद्देश्य वैष्णव सम्प्रदाय की मान्यताओं की पुष्टि करके इस सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार करना और श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार सिद्ध करना है जोकि वेद विरुद्ध है ।

19. प्रकृति के तीन गुण है—सत्व, रज और तम । इनको वैदिक भाषा में आपः के नाम से पुकारा जाता है । सतोगुण में ज्ञान रजोगुण में लोभ व काम और तमोगुण में आलस्य व मोह-ममता का प्राधान्य होता है ।

20. गीता में शरीर को क्षेत्र और आत्मा को क्षेत्रज्ञ के नाम से पुकारा गया है ।

21. अश्वत्थ का अर्थ है – अ = नहीं , श्व =कल, स्थ = स्थिर रहने वाला अर्थात् जिसका कल तक भी ठहरने का कोई भरोसा न हो । यह शब्द प्रकृति का प्रतीक है जो परिवर्तनशील व अनादि है । यह इसलिये अव्यय भी है । प्रकृति रूपी वृक्ष की शाखाएं हैं—

महत्, अहंकार, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच महाभूत, पाँच तन्मात्राएं और मन । इन शाखाओं की कोपलें हैं— शब्द, रस, रूप, स्पर्श और गंध ।

22. दैवी सम्पदा के गुण हैं—

निडरता, मन की शुद्धता, दान देने की प्रवृति, तप, त्याग आदि और इसके विपरीत आसुरी सम्पदा के दोष हैं—पाखंड, क्रोध, कठोरता, अभिमान आदि ।

23. कर्म के 5 विभिन्न कारण निम्नलिखित हैं–
(1) आधार (अधिष्ठान), (2) कर्ता, (3) साधन (इन्द्रियाँ या करण), (4) प्रयत्न, (5) देव (भाग्य)

24. गीता का श्रीगणेश धर्म और इति मम शब्दों से हुआ है । इसका सार है कि मेरा धर्म क्या है ?

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किम कुर्वत संजय ।। गीता 1.1

कुरुक्षेत्र की धर्मभूमि पे जब
मिले पाण्डवों से मेरे लाल सब ।
लड़ाई का दिल में जमाये ख्याल,
तो संजय बता उनका सब हाल ।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूविर्ध्रुवा नीतिर्मतिमर्म ।। गीता 18.78

जिधर है कृष्ण मेहरबाँ, योगेश्वर है खुद जहाँ,
जिधर है साहिब-ए कमाँ, वो अर्जुन जैसा पहलवाँ ।
वहीं है शादकामियां वही हैं खुश इन्तज़मियाँ ।
वहीं है कामरारियाँ वहीं है शादमानियाँ ।।

25. वेदों का सार उपनिषदें हैं, उपनिषदों का सार गीता है । गीता का सार गीता के 18वें अध्याय का 66 वाँ श्लोक है और इस श्लोक का सार शरणागति है । इसका भाव यह है कि तू सब अधर्मों को छोड़कर मेरी तरह परमात्मा की शरण में आ जा फिर निश्चय ही तू परमगति को प्राप्त होगा ।

7. पुराण

1. 18 पुराणों का सार है–

अष्टादश पुराणेशु व्यासस्य वचन द्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम् ।। –स्कंद पुराण 1.8

चार वेद, षट शास्त्र में बात मिली है दोय ।
दुःख दीने दुःख होत है सुख दीने सुख होय ।।
पुराणों में दो बातें ही मुख्य है । परोपकार पुण्य है और दूसरों को पीड़ा देना पाप है ।

2. पुराण शब्द के अर्थ है प्राचीन ग्रंथ, पर है नवीन। वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत इन सबके बाद इनकी रचना हुई है । महत्व बढ़ाने के लिऐ इन्हें व्यास रचित कहा गया है और पुराण नाम रखा है ।

3. मुख्य पुराण 18 हैं और उनके निम्नलिखित नाम हैं–
(1) श्रीमद्भागवत पुराण, (2) शिव पुराण, (3) विष्णु पुराण, (4) ब्रह्म पुराण, (5) पद्म पुराण, (6) नारद पुराण, (7) मार्कण्डेय पुराण, (8) अग्नि पुराण, (9) भविष्य पुराण, (10) ब्रह्मवैवर्त पुराण, (11) लिंग पुराण, (12) वराह पुराण, (13) स्कन्द पुराण, (14) वामन पुराण, (15) कूर्म पुराण, (16) मत्स्य पुराण, (17) गरुड़ पुराण, (18) ब्रह्माण्ड पुराण

4. पुराणों के श्लोकों की संख्या के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न विचार हैं । परन्तु नारद पुराण के अनुसार पुराणों में 3,99,100 श्लोक हैं ।

5. मार्कण्डेपुराण सब से छोटा पुराण हैं और इसमें 9000 श्लोक हैं ।

6. स्कंद पुराण सब से बड़ा पुराण है और इसमें 81,100 श्लोक हैं ।

7. श्रीमद्भागवत पुराण सर्वश्रेष्ठ पुराण है जैसे श्रीमद्भागवत के अंत में स्पष्ट लिखा है–

सर्ववेदान्तसारं हि श्रीभागवत मिष्यते ।
तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः कवचित् ।। –12.13.15

यह श्रीमद्भागवत पुराण समस्त उपनिषदों का सार है । जो इस रस-सुधा का पान करके छक चुका है वह किसी और पुराण-शास्त्र में रम नहीं सकता । जैसे नदियों में गंगा, देवताओं में विष्णु और वैष्णवों में श्रीशंकर जी सर्वश्रेष्ठ है, वैसे ही पुराणों में श्रीमद्भागवत है ।

8. श्रीमद्भागवत् का आरम्भ निम्नलिखित श्लोक से होता है–

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नमः ।। –1.1.1

सच्चिदानंद स्वरूप श्रीकृष्ण को हम नमस्कार करते हैं, जो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश के हेतु तथा आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों प्रकार के तापों का नाश करने वाले हैं ।

9. वृत्रासुर राक्षस का वध करने के लिए दधीचि ऋषि के शरीर की हड्डियाँ मांगी गई थी ?

10. श्रीमद्भागवत के अनुसार सप्तऋषियों के निम्न नाम थे–
(1) कश्यप, (2) अत्रि, (3) वसिष्ठ, (4) विश्वामित्र, (5) गौतम, (6) जमदग्नि,(7) भारद्वाज ।
–8वाँ स्कंद 13 अध्याय श्लोक 5

11. श्रीमद्भागवत् के अनुसार रुक्मिणी के अतिरिक्त कृष्ण की 8 पत्नियाँ निम्नलिखित थीं–
(1) सत्यभामा, (2) जाम्वन्ती, (3) रोहनी, (4) कालिन्दी, (5) सत्या, (6) लक्ष्मा, (7) मित्रवृंदा, (8) सुभद्रा ।
परन्तु यह सत्य नहीं है क्योंकि श्रीकृष्ण की केवल एक ही पत्नी रुक्मिणी थी ।

12. कंस की दो पत्नियाँ थीं–एक अस्ति और दूसरी प्राप्ति । ये दोनों बहनें मगधराज जरासंध की पुत्रियाँ थीं ।

13. श्रीमद्भागवात पुराण में राधा का नाम नहीं आता है । केवल ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा का नाम आता है । जहाँ राधा कृष्ण का नाम आया है । वस्तुतः पंडितों ने कृष्ण के साथ राधा का नाम वैसे ही जोड़ दिया है जोकि प्रक्षिप्त है ।

14. श्रीमद्भागवत में 12 स्कंद, 365 अध्याय और 18000 श्लोक हैं ।

15. महाकवि सूरदास कृत 'सूरसागर' में भी श्रीमद्भागवत की भाँति 12 स्कंद हैं। परन्तु यह भागवत का अनुवाद नहीं है क्योंकि इसमें सूरदास की मौलिकता के दर्शन होते हैं।
16. महर्षि दयानंद सरस्वती ने श्रीमद्भागवत का खंडन किया था और उसका नाम 'भागवत खण्डम्' रखा था।
17. श्रीमद्भागवत पुराण का अंतिम श्लोक निम्नलिखित है–
नाम संकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम्।।
जिनके नाम संकीर्तन से सारे पापों का सर्वथा नाश हो जाता है और जिनके चरणों में आत्मसमर्पण व प्रणाम सदा के लिये दुःखों को शांत कर देता है, मैं उन्हीं परब्रह्म श्रीकृष्ण को नमस्कार करता हूँ।
18. विष्णु पुराण के अनुसार कृष्ण की आयु 125 वर्ष (3227 ई. पू. से 3102 ई.पू. तक) थी।
19. सावित्री सत्यवान की कथा मत्स्य पुराण में मिलती है?
20. दुर्गासप्तशती ग्रंथ नारद पुराण का भाग है?
21. हिन्दुओं में मृत्यु के पश्चात् गरुड़ पुराण पढ़ा जाता है?
22. विष्णु पुराण में छः अंश हैं और उनके निम्नलिखित नाम हैं–
(1) सृष्टि वर्णन - ध्रुव एवं प्रह्लाद के चरित्र, (2) भूगोल का वर्णन, (3) चारों आश्रमों के धर्म का वर्णन, (4) इतिहास का वर्णन, (5) श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन, (6) भक्ति विवेचन।
23. स्कंद पुराण के 7 खंडों का सार निम्नलिखित है :–
   (1) **महेश्वर खंड** - इसमें पार्वती की अनेक लीलाओं का वर्णन है।
   (2) **वैष्णव खंड** –इसमें प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर उसकी पूजा विधान और उससे सम्बद्ध अनेक प्रसंगों का वर्णन है।
   (3) **ब्रह्म खंड** – इसमें धर्मरण्य और उज्जयिनी के महाकाल तीर्थ का वर्णन है।
   (4) **काशी खंड** – इसमें काशीपुरी के महात्म्य का वर्णन है।
   (5) **रेवाखंड** – इसमें सत्यनारायण की कथा और नर्मदा के तट के तीर्थों का वर्णन है।

(6) **नागर खंड** – इसमें हाटकेशवर महादेव नगर ब्रह्म एवं गुराज के तीर्थों का वर्णन है ।

(7) **प्रभास खंड** – इसमें द्वारका के पास के स्थान प्रवास का वर्णन है ।

24. पद्म पुराण के 5 खंडों का सार निम्नलिखित है :–

(1) **सृष्टि खंड** – इसमें पुलस्त्य ऋषि द्वारा भीष्म सृष्टिसृजन का वर्णन है । तीर्थ के महात्म्य और ब्रह्मा के यज्ञ का वर्णन है । दान कितने प्रकार के होते हैं आदि का भी वर्णन मिलता है ।

(2) **भूमिखंड** – इसमें शिवशर्मा, राजापृथु, महर्षि च्यवन, ययाति आदि की रोचक एवं शिक्षाप्रद कथाएँ हैं ।

(3) **स्वर्गखंड** – इसमें सारे ब्रह्माण्ड का वर्णन है, शकुन्तला की कहानी, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों का महात्म्य, व्यास एवं जैमिनी का संवाद समुद्र-मंथन, व्रतों का विस्तारपूर्वक वर्णन शामिल है ।

(4) **पाताल खंड** – इसमें पाताल लोक का वर्णन, श्रीराम के राज्याभिषेक एवं अश्वमेध यज्ञ का वर्णन, महर्षि पुलस्त्य के वंश का वर्णन, श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन, महर्षि दधीचि एवं महर्षि गौतम की कथाओं का वर्णन है ।

(5) **उत्तर खंड** – इसमें अनेक कथाएं हैं । जैसे विष्णु-भक्ति का महात्म्य, गीता महात्म्य आदि के अतिरिक्त श्रीराम व श्रीकृष्ण अवतारों की कथाएँ भी हैं ।

25. पुराण आर्ष ग्रंथ नहीं हैं क्योंकि आर्ष ग्रंथ वे होते हैं जोकि वेदानुकूल हो । पुराणों के लेखकों के विषय में निश्चित् रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है । वस्तुतः पुराण समय-समय पर विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गये । ये किसी एक लेखक की रचनाएँ नहीं हैं । वस्तुतः इनमें अधिकतर बातें कपोलकल्पित और अनैतिक हैं ।

8. बाइबल

1. बाइबल का अर्थ है धार्मिक पुस्तक ।
2. बाइबल दो प्रकार के हैं । कैथोलिक बाइबल और प्रोस्टेंट बाइबल ।
3. कैथोलिक बाइबल में 73 पुस्तकें हैं और प्रोस्टैंट बाइबल में 66 पुस्तकें हैं ।
4. बाइबल के दो भागों के नाम निम्नलिखित हैं ।
   (1) पुराना नियम (Old Testament), (2) नया नियम (New Testament)
5. पुराना नियम 39 पुस्तकें और नया नियम 27 पुस्तकें । इस प्रकार प्रोस्टैंट बाइबल में कुल 66 पुस्तकें हैं ।
6. पुराना नियम हिब्रूभाषा और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था ।
7. बाइबल का संसार की लगभग 2000 से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । इसका मुख्य कारण ये है – (1) संसार में इसके अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है । (2) इसके अतिरिक्त इसके अनुयायियों के पास पर्याप्त मात्रा में धन है । (3) संसार के 84 देशों पर उनका शासन था । यहाँ तक कि उनके राज्य में कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता था ।
8. बाइबल का आरम्भ उत्पत्ति (Genesis) और इति प्रकाशन (Revelation) नामक पुस्तक से हुआ है ।
9. बाइबल की सबसे बड़ी पुस्तक भजन संहिता (पुस्तक नं. 19 पुराना नियम) और सबसे छोटी पुस्तक द्वितीय पत्र (पुस्तक नं. 24 नया नियम) है ।
10. ईसा मसीह की माता का नाम मरियम था । वह कुंवारी थी तभी अपने पिता के घर में ही गर्भवती हो गई थी । उसके माता-पिता

ने उसका बिना गर्भ की बात बताये धोखे से युसफ नामक बढ़ई से विवाह कर दिया। परन्तु संकोचवश मरियम ने ईसा के वास्तविक पिता का नाम किसी को भी नहीं बतलाया।

11. ईसा मसीह ईसाई धर्म के संस्थापक थे जिनका उपदेश, संदेश, निर्देश का वर्णन नया नियम (New Testament) में मिलता है।

12. आज संसार में लगभग 204 विभिन्न देश हैं जिनमें 152 देश यहूदियों-पारसियों व अंग्रेज़ों के हैं। अतः ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है।

13. ईसाई धर्म के अनुयायियों को मुख्यतः निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है :--
    (1) Roman Catholic Church
    (2) Prostestant Church
    (3) Eastern Orthodex Church

14. ईसाईयों के केवल तीन सूत्र हैं जो उन्हें परस्पर सम्बद्ध रखते हैं– क्राइस्ट, क्रॉस और बाइबल। पैग़म्बर क्राइस्ट, चिन्ह क्रॉस और धार्मिक ग्रंथ बाइबल है। परन्तु अब ईसाई धर्म भी 76 सम्प्रदायों में बँट चुका है।

15. बाइबल में आज तक 27 संशोधन हो चुके हैं। परन्तु वेद में एक भी संशोधन नहीं हुआ क्योंकि वेद ईश्वरीय वाणी है। जैसे बाइबल में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और पृथ्वी स्थिर रहती है। परन्तु जब गैलीलियो ने सिद्ध कर दिया कि यह सिद्धान्त सत्य नहीं है क्योंकि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी इसके चारों ओर 364¼ दिनों में चक्कर लगाती है। इस बात पर गैलीलियो को कैद में डाल दिया गया और उसे अनेक यातनाएं दी गई थी। परन्तु आज इस सिद्धान्त को सारा संसार मानता है।

16. ईसा मसीह ईसाई धर्म के संस्थापक थे और उनका जन्म आज

से लगभग 2016 वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर को रात के 12 बजे वेथलेहम नगर में हुआ था ।

17. ईसा मसीह का जन्म के समय एमानुएल नाम रखा गया था ।

18. प्रभु यीशु मसीह को 39 कोड़े लगवाए गए, हाथों-पैरों में कीलें ठुकवाई गई । पसली में नेजा मारा गया । उनके मुंह पर थूका गया और जब यीशु ने सलीब से पानी माँगा तो पानी की जगह सिरका दिया गया । ऐसे समय में भी प्रभु यीशु मसीह ने उन पर अत्याचार करने वालों के लिए परमेश्वर से कहा कि हे परमेश्वर ! इनको क्षमा कर दो क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं ।

19. यह बड़े खेद का विषय है कि ईसा मसीह का जन्म दिन उनकी मृत्यु से लगभग 200 वर्ष पश्चात् मनाया जाने लगा । तभी ईसाई धर्म के अनुयायी प्रति वर्ष विश्व में 25 दिसम्बर को इनका जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाते हैं ।

20. ईसा ईश्वर का इकलौता पुत्र नहीं था । परमात्मा हमारा सब का माता-पिता है और हम सब उसकी सन्तानें हैं ।

21. ईसाई कहते हैं कि ईसा ने सब व्यक्तियों के पापों की गठरी अपने सर पर रख ली और उसके बलिदान से सब व्यक्ति पापों से छूट जाएंगे? परन्तु यह वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है । क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के पापों की गठरी अपने सिर पर नहीं उठा सकता । अपितु प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है ।

22. ईसाई कहते हैं कि ईसा पर विश्वास रखने वाले पापों से छूट जायेंगे और इसके विपरीत जो ईसा पर इमान नहीं लायेंगे वे पापी हैं । परन्तु यह सत्य नहीं है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये हुए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है क्योंकि

बिना भोगे कभी भी कर्म नष्ट नहीं होते । यदि इस सिद्धान्त को न माने तो संसार में और पाप बढ़ जायेंगे । ईसाई धर्म का यह कहना–

ईसा मसीह पाप दूर कर देगा महज एक पागलपन की बात है ।

–ईसाईमत का पोलखाता पृ० 11

23. ईसा 13 वर्ष से लेकर 31 वर्ष तक भारत के कश्मीर राज्य में रहे और इसकी क़ब्र आज भी वहाँ मौजूद है ।

24. यीशु के 12 शिष्य थे और उनके नाम निम्नलिखित हैं –

1.पररम, 2. अन्द्रियास, 3. याकूब, 4. यूहमा, 5. फिलिप्पस, 6. बुरतुल्मय, 7. थोमा, 8. मत्ती, 9. लहफई का पुत्र याकूव, 10. तद्दै, 11. शिमौन कनानी, 12. यहूदा इस्कारियोती ।

25. ईसा मसीह को यहूदा इस्कारियोती नामक शिष्य ने पकड़वाया था ।

9. क़ुरान

1. क़ुरान का अर्थ है पढ़ने योग्य पुस्तक (Excellant Book) इसके विषय में राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं–

   क़ुरान क्या है? ईश्वर-प्रदत्त एक अरबी ग्रंथ। उसके प्रदान का प्रयोजन क्या? यही कि सन्मार्ग-भ्रष्ट जनों को भय दिखा और श्रद्धालुओं को उनके पुण्य कार्यों के मंगलमय परिणाम का संदेश दे सत्पथ पर आरूढ़ किया जाये।

   –इस्लाम धर्म की रूपरेखा पृ० 14

2. क़ुरान हज़रत मुहम्मद साहिब पर नाज़िल (उतरी) हुई।
3. क़ुरान हज़रत मुहम्मद साहिब पर 23 वर्ष समय तक नाज़िल (उतरी) होती रही।
4. क़ुरान का संकलन 650 ई० में किया गया था।
5. क़ुरान में 30 पारे, 114 सूरे, 558 रुकू, 6,236 आयतें, 77,629 शब्द और 3,23,015 अक्षर हैं।
6. क़ुरान में सब से छोटा 19वाँ पारा (वक़ालल्लज़ीन सूर-हे-फ़ुर्कान) है और सबसे बड़ा पारा 23वाँ (वम्मालिय) है।
7. इस्लाम का अर्थ है ख़ुदा के आगे सम्पूर्ण समर्पण और मानव के साथ शांति और प्रेम का व्यवहार करना।
8. इस्लाम का मूलमंत्र कलमा अर्थात् -- लाईलाहा इल्लल्लाह-अल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह।

   ख़ुदा एक ही है उसके कोई बराबर नहीं है। मुहम्मद उसके संदेशवाहक हैं।
9. मृत्यु के समय मुसलमान भाई कहते हैं कि हे ख़ुदा! मरने वाले की रूह को शांति मिले। यह सच है कि हमने भी मरना है।
10. हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद निम्नलिखित व्यक्तियों ने क़ुरान को एकत्रित किया–

1. हज़रत अली, 2. हज़रत अबू जैद, 3. हज़रत ज़ैदविन साबित रजि उल्लाह, 4. हज़रत अन्स । --बुखारी शरीफ हदीस 389 सफा 166 जिल्द 2

11. क़ुरान के अनुसार अल्लाह के 99 नाम हैं ?

12. निम्नलिखित जुर्मों में मुसलमान क़त्ल के काबिल होता है ?

(1) किसी को मार डालने वाला ।

(2) ब्याहा हुआ ज़िना (व्यभिचार) करे ।

(3) मुरतिद हो (मुसलमान काफिर हो जाये)

–जिल्द 3 फसल-1 हदीस नं० 254

13. क़ुरान में ओम् है । ओम् विश्व शांति एवं मानव एकता का प्रतीक है । ओम् के तीन अक्षर हैं--1. अ =परमात्मा, 2. उ = आत्मा, 3. म् = प्रकृति ।

इसी प्रकार क़ुरान में भी ओम् के लिये तीन अक्षर लिखे हैं--

1. अलिफ़ = अल्लाह = परमात्मा ।

2. लाम = लतियल्कुलजीम = रूह = आत्मा ।

3. मीम = माया = प्रकृति ।

यहाँ तक कि क़ुरान में ओ३म् शब्द भी लिखा है और हवन करने के लिए भी लिखा है ।

14. जिहाद का अर्थ है बुराई को समाप्त करने के लिए संघर्ष करना । जिहाद निम्नलिखित तीन प्रकार का होता है ।

(1) नफसी जिहाद – मन को कुकर्म करने से रोकना ताकि मन शुद्ध रहे । सारे ब्रह्माण्ड के कल्याण के लिये तत्पर रहना । स्वयं सत्य मार्ग पर चलना और दूसरों को चलाना जिससे सभी इंसान नेकी के मार्ग पर चलें । जैसे क़ुरान के सूरे फातियां में लिखा है । **ऐ अल्लाह पाक ! हमें ऐसे रास्ते पर चला जिस मार्ग पर चलने पर आपकी अपनी रहमत हुई है । न कि ऐसे रास्ते पर जिस पर आपको आज़ाब नाज़िल हुआ है ।**

ऐसे विचारों वाला व्यक्ति हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कोई भी हो सकता है ।

(2) कलमी जिहाद – हम कलम के द्वारा पुस्तकों एवं मीडिया के द्वारा ग़लत कार्यों के विरुद्ध आवाज़ उठाकर रोकें जिससे सारे संसार में ज्ञान, अहिंसा एवं मानवता का साम्राज्य स्थापित हो जाये ।

(3) शमुशीर जिहाद – यदि काफ़िर (अत्याचारी) बार-बार समझाने पर भी न माने तो हमें शक्ति के अनुसार तलवार उठा लेनी चाहिए और उसे डराकर मानवता के मार्ग पर लाना चाहिए। परन्तु यदि फिर भी न माने तो उसका वध कर देना चाहिए ताकि पुनः कुकर्म न कर सके । पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहिब ने इंसाफ को कायम करने के लिये जिहाद किया था ।

15. मक्के की मस्जिद काबा में एक विशाल काले रंग के पत्थर को ''संगअसवद'' के नाम से पुकारा जाता है । प्रत्येक मुसलमान हज करते समय इसको चूमता है । क्योंकि हज़रत मुहम्मद साहिब ने इसको चूमा था । क्योंकि यह स्वर्ग से आया हुआ है । ऐसा करने से अल्लाह हाजी के सारे गुनाह माफ कर देता है । परन्तु यह सिद्धान्त वैदिक सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि किये हुए कर्मों का फल अवश्य भुगतना पड़ता है ।

16. क़ुरान की 116 आयतें वेदमंत्रों का अरबी रूपांतर है जैसे–

लाइलाहा इल्लाल्लाह (तौहीद) एकेश्वरवाद

केवल एक अल्लाह ही पूजनीय है जोकि सारे संसार का स्वामी व पालक है । वस्तुतः यह आयत भाग ऋग्वेद के सूक्त का अरबी रूपांतर है । देखिए--

जनानां एको विश्वस्य भुवनस्य राजा –ऋग्वेद 4.36.4

इस सारे जगत् एवं सृष्टि का एक स्वामी परमात्मा है । उसकी ही उपासना करो ।

यहाँ तक कि क़ुरान में वेद के स्थान पर ''वुद'' शब्द आया है। यह ''वुद'' शब्द वेद का अपभ्रंश रूप है क्योंकि अरबी भाषा में मात्राएं ऊपर न लगा कर नीचे लगती हैं। अतः वेद का वुद बन गया। जैसे कि डॉ० कुँवर आनन्द सुमन सिंह लिखते हैं--

तख्त पर अल्लाह ताला के बराबर किताब रखी है जिसके चार भाग हैं। उसका नाम वुद है। —वैदिक धर्म और इस्लाम पृ० 44

17. क़ुरान में निम्नलिखित उद्धरणों से पता चलता है कि इसमें विरोधाभास है। जैसे--

(1) कुल इन्नल्लाहा ला यामुरो विल फ़ाहशाये

—पारा 8 रुकू 3-10

ऐ मुहम्मद! कह दो कि अल्ला आदेश नहीं देता है, बुरी बात व बुरे काम के लिये। ख़ुदा का स्वभाव सद्गुणों व सत्कार्यों की आज्ञा देता है।

(2) वा इज़ा अन्नोहलेक़ा अमोहलेका कर्यतन-1 अमर्ना मुतरफीहा फ़फसक़ू फ़ीहा फहक्का अलैहलकौलो फ़दर्म्मनाहा तदमीरा —पारा 15 रुकू 2-2

जब हम किसी ग्राम या नगर के लोगों का विनाश करना चाहते हैं तो उसके धनपतियों को आज्ञा कर देते हैं कि उनके लिये भेजे गये रसूल का विरोध करें। फिर वे रसूल की आज्ञा से परे हो जाते हैं। अनिवार्य हो जाता है उस बस्ती वालों के लिये अजब (संकट उत्पन्न करने की आज्ञा) का कलमा अर्थात् अज़ान के अधिकारी हो जाते हैं और फिर जड़ से उखाड़ देते हैं हम उन्हें और उनके घर बुरी तरह नष्ट कर देते हैं।

18. क़ुरान में पुनर्जन्म का सिद्धान्त है। जैसे—
जिस पर परमेश्वर कुपित हुआ उनमें से कुछ को वानर और सुअर बना दिया। (5.9.4) (7.21.3)

19. इस्लाम में 5 मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :—

1. तौहीद (एकेश्वरवाद), 2. नमाज़ (प्रार्थना), 3. जक़ात (दान), 4. रोजा (उपवास), 5 हज़ (तीर्थ यात्रा)

20. नियमित समय में काबा-यात्रा करना हज़ कहलाता है और इसके अतिरिक्त अन्य समयों में वही उम्रा कहलाता है ।

21. हज पर जाने के बाद मुसलमान भाइयों को मुख्यतः निम्नलिखित 4 रस्में निभानी पड़ती हैं –

(1) इहाम – मक्का प्रवेश से दूर ही एक स्थान पर सब हाजी एक कपड़ा तक ऊपर करके पहनते हैं ।

(2) तवाफ़ – क़ाबा की परिक्रमा ।

(3) सई – सफ़ा और मर्वा की पहाड़ियों के बीच दौड़ना ।

(4) अर्फ़ात – एक विशेष स्थान पर ठहराना ।

22. मोमिन का अर्थ है सत्यप्रिय और मुस्लिम का अर्थ है शांतिप्रिय ।

23. हदीस का अर्थ है क़ुरान का शेष संग्रह (Appendix)

24. क़ुरान कर्मसिद्धान्त को नहीं मानता जैसे कि वेदों में लिखा है कि जैसी करनी वैसी भरनी । जैसे–

कुल लिल्लज़ीना कफ़रू इंय्यन्तहू युग्फर लुहम्मा कद सलफ़

–पारा 9 रुकू 4-18

काफ़िरों को कह दो कि यदि कुफ़र का परित्याग कर देंगे तो उनके पूर्व में किये हुए कुफ़र के पाप भी क्षमा कर दिये जायेंगे और शिरक के अतिरिक्त अन्य पाप भी जिसके अल्लाह चाहेगा क्षमा कर देगा । दूसरे पाप छोटे या बड़े जान बूझकर या भूल से किये हो, पाप करने वाला बिना तौबा किये ही मर जाये तो उनको क्षमा करना अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है ।

25. क़ुरान का सार है कि जीव हत्या मत करो । पशु मारने से जन्नत नहीं मिलेगा । अतः अहंकार को मारो । यह सारी बुराइयों की जड़ है । मानवता की सेवा करो । सूद मत लो । शराब को हराम

समझो। सच्चा मुसलमान दूसरे धर्म का आदर करता है। जिहाद अन्य दूसरों धर्मों के मानने वालों को जबरदस्ती इस्लाम धर्म में लाने के लिये नहीं है। अपितु अपने धर्म पर पूरा उतरने के लिये पूरी तरह शक्ति लगाने के लिये है। जब दो मुसलमान भाई मिलते हैं तो एक कहता है--''अस्लाम वालेकुम'' और दूसरा कहता है ''वाले कुम अस्लाम'' अर्थात आप पर शान्ति की वर्षा हो। जब इस्लाम में शान्ति पर इतना जोर दिया जाता है तो आतंकवाद के लिये गुंजाइश नहीं रह सकती है। अतः मुस्लिम भाइयों को आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये जिससे सारी मानवता में प्रेम की भावना फैले। उत्तर प्रदेश मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष काजी जैनुल साजिद्दीन मुफ्ती ने कहा है –

पवित्र क़ुरान और हदीस (क़ुरान की व्याख्या) शांति और भाईचारे का उपदेश देते हैं। अतः समय की मांग है कि हम अपने युवाओं को शिक्षित करें कि वे आतंकवादी संगठनों के बहकावे में न आएं जो अपने कुत्सित इरादों की पूर्ति के लिए इस्लाम का दुरुपयोग कर रहे हैं।

–पंजाब केसरी दिनांक 14.8.2015

10. श्रीगुरुग्रंथसाहिब

1. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का सम्पादन 16-8-1604 ई० को हुआ था ।
2. श्री गुरुग्रंथसाहिब का सम्पादन गुरु अर्जुनदेव जी ने भाई गुरदास जी के शुभ हाथों से करवाया था ।
3. श्रीगुरुग्रंथसाहिब को सर्वप्रथम ''पोथीसाहिब'' नाम से पुकारा जाता था ।
4. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का सर्वप्रथम ग्रंथी बाबा बुड्डा जी थे ।
5. श्रीगुरुग्रंथसाहिब की सर्वप्रथम कथा के पश्चात् गुरु अर्जन देव जी ने संतों को आदेश दिया कि आप इस ग्रंथ को गुरु का हृदय जानकर इसका सम्मान करना क्योंकि यह गुरु सार्वकालिक है, इसीलिए इस पर विश्वास करना उत्तम है । मेरे शरीर से बड़ा मान कर चलना । मैं स्वयं इनका आदर करता हूँ ।
6. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को 1705 ई० में शामिल किया था ।
7. गुरुगोबिन्द सिंह जी ने इस ग्रंथ को 4-10-1708 ई० को गुरियाई बख्शी थी तभी से इसको श्रीगुरुग्रंथसाहिब के नाम से पुकारा जाने लगा । अपनी मृत्यु से केवल 3 दिन पूर्व श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिक्ख संगत को बुलाया और श्रीगुरुग्रंथसाहिब लाने का कहा और फिर आदेश दिया । संतों ! मेरे बाद कोई जीवित व्यक्ति इस गुरुगद्दी पर विराजमान नहीं होगा । इस गुरुगद्दी पर श्रीगुरुग्रंथसाहिब विराजमान होंगे । अब आप लोग इन्हीं से अपना मार्ग दर्शन कराना और इन्हीं से आदेश प्राप्त करना ।
8. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का आरंभ ੧ ओं सतिनामु शब्द से हुआ है जोकि सिक्ख धर्म का मूलमंत्र है । सारा ग्रंथ इसकी ही व्याख्या है । यह मूलमंत्र इस ग्रंथ में 33 बार अंकित है । इसका भाव है

कि परमात्मा एक है और वह एकमेव अद्वितीय है । जैसे–

एकम एकंकारु निराला । । अमरु अजोनी जाति न जाला । ।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ । । खोजत खोजत घटि घटि देखिआ । । –बिलाबलु महला 1 पृ० 838

प्रभु एकमेव अद्वितीय है । वह शाश्वत अमर और अजन्मा है । वह जातियों के जंजाल से भी रहित है । वह अगम्य एवं अगोचर है । न उसकी कोई रूपरेखा है । खोजते हुये व्यक्ति उसको प्रत्येक हृदय में देखता है ।

9. इस ग्रंथ में वर्णित वाणी को निम्नलिखित 5 नामों से पुकारा जाता है– 1. गुरुवाणी, 2. धुर की वाणी, 3. खसम की वाणी, 4. महापुरख की वाणी, 5. सतिगुर की वाणी । जैसे–

धुर की वाणी आई । । तिनि सगली चिंत मिठाई । ।

–मुहला 5 पृ० 628

प्रभु की वाणी आई और उसने सारी चिन्ता दूर कर दी ।

10. श्रीगुरुग्रंथसाहिब के रागों की संख्या 31 है । इनके निम्नलिखित नाम हैं--

1. सिरीरागुरु 2. माझ, 3. गउड़ी, 4. आसा, 5. गूजरी, 6. देवगंधारी, 7. बिहागड़ा, 8. बडहंसू, 9. सोरठि, 10. धनासरी, 11. जैतसरी, 12. टोड़ी, 13. बैराडी, 14. तिलंग, 15. सूही, 16. बिलावल, 17 गोड, 18. रामकली, 19. नरनारायण, 20. माली गउड़ा, 21. मारू, 22. तुखारी, 23. केदारा, 24. भैरउ, 25. बसंतु, 26. सारंग, 27. मलार, 28. कानड़ा, 29. कलिआन, 30. परभाती, 31. जैजावती ।

11. श्रीगुरुग्रंथसाहिब 36 संत महात्माओं की रचनाओं का संकलन है । इनके मुख्य नाम निम्नलिखित हैं–

1. गुरु नानक, 2. गुरु अमर दास, 3. गुरु राम दास, 4. गुरु अर्जन देव, 5. गुरु तेग बहादुर, 6. कबीर, 7. रविदास, 8. नामदेव, 9. सेख फरीद, 10. महात्मा पीपा आदि ।

12. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 7 विभिन्न गुरुओं की वाणियों का सांकेतिक विवरण निम्नलिखित है–

क्रम	नाम	महला	शब्द, छंद, श्लोक आदि
1.	गुरु नानक देव जी	1	958
2.	गुरु अंगद देव जी	2	62
3.	गुरु अमर दास जी	3	870
4.	गुरु रामदास जी	4	638
5.	गुरु अर्जन देव जी	5	2305
6.	गुरु तेग बहादुर जी	9	59 शब्द 57 श्लोक
7.	गुरु गोबिन्द सिंह	10	1 श्लोक नं. 54 पृ. 1429

13. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 15 विभिन्न भक्तों की वाणियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है ।

क्रम	नाम	शब्द एवं श्लोक आदि
1.	कबीर जी	537 शब्द एवं श्लोक
2.	सेख फरीद जी	123 शब्द एवं श्लोक
3.	नामदेव जी	61
4.	रविदास जी	40
5.	राइबल वंड तथा सताडूमि	8
6.	बाबा सुदरु जी	6

7. त्रिलोचन जी 4

8. धना जी, वेणी जी, मरदाना जी 3 (प्रत्येक के)

9. जैदेव जी, भीसन जी, सूरदास जी 2 (प्रत्येक के)

10. परमानंद जी, पीपा जी, रामानंद जी 1 (प्रत्येक के)

11. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 11 भट्ट वाणकारों की वाणी पृष्ठ 1389 से 1409 तक अंकित हैं। इन्होंने पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव से पांचवीं पातशाही श्री गुरु अर्जन देव जी तक की स्तुति की है। इनके कुल निम्नलिखित 123 सैवैये हैं–

महला-1 = 10, महला-2 = 10, महला-3 = 22, महला-4 = 60, महला-5 = 21, इन 123 सैवेयों का विवरण निम्नलिखित हैं।

1. भट्ट कल सहार = 52, 2. भट्ट मथरा = 14, 3. भट्ट गयंद जी = 13, 4. भट्ट नल जी = 16, 5.भट्ट कीरत जी = 8, 6. भट् जाल्प जी = 57, 7. भट्ट वलज = 5, 8 भट्ट सलजी = 3, 9 भट्ट हरिवंश जी = 2, 10. भट्ट भिखा जी = 2, 11 भट्ट मलजी = 1

14. जपुजी साहिब श्री गुरु नानक देव जी की रचना है और इसमें 38 पावड़ियां और 1 सलोकु हैं।

15. ''सुखमनीसाहिब'' श्रीगुरु अर्जन देव जी की रचना है। इसमें 24 अष्टपदियां दिन रात के 24 घंटों की गिनती के अनुसार है। प्रत्येक अष्टपदी में 1000 अक्षर हैं। इस प्रकार 24 अष्टपदियों का पाठ पुरुष के 24 हज़ार श्वासों को सफल कर देता है।

16. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में नितनेम की मुख्य वाणियां निम्नलिखित हैं–जपुजीसाहिब (पृ० 1-8), सुखमणी साहिब (पृ० 262-296) आदि।

17. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में हरि शब्द 8344 बार, राम शब्द 2583

बार और वाहिगुरु शब्द 13 बार आये हैं । केवल कवि गयंद ने वाहिगुरु 12 बार, वाहगुरु 1 बार कुल 13 बार इस शब्द का प्रयोग किया गया है ।

18. श्रीगुरुग्रंथसाहिब की पृष्ठ संख्या 1430 पृष्ठ । इनको अंग नाम से पुकारा जाता है ।

19. श्रीगुरुग्रंथसाहिब गुरुमुखी लिपि और पंजाबी भाषा में लिखा गया है । परन्तु इसमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, पंजाबी, अरबी, फारसी आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त किये गये हैं । इस प्रकार इसकी भाषा मिश्रित बन गई है । जैसे–

सचु निवाज यकीन मुसला ।।

मनसा मारि निवारिहु आसा ।।

देह मसीति मनु मउलाणा कमल खुदाई पाकु खरा । ।2 ।।

सरा सरीअति ले कंमावहु ।।

तरीकति तरफ खोजि टोलाबहु ।।

मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु

फिरि न मरा । ।3 ।। –मुहला-5, पृ० 1083

श्री गुरु अर्जन देव जी फरमाते हैं कि सच ही नमाज है और विश्वास ही मुसल्ला है । मुसल्ला वह कपड़ा होता है जिस पर बैठकर मुसलमान भाई नमाज पड़ते हैं । आसा मनसा को दूर करो । देह सच्ची मस्जिद है । मन सच्चा मौलवी है । परमात्मा की दरगाह से उठ रहा कलमा (नाम अथवा शब्द) पवित्र है अर्थात् हमारी देह के अन्दर ही शब्द रूपी निर्मल नाद आकाशवाणी या कलमा हो रहा है जो अतिशुद्ध और निर्मल है । शरीअत, तरीक़त, मारफत और हक़ीक़त सूफी फकीरों के चार दरजे अथवा अवस्थाएं हैं । यहाँ गुरु साहिब के कहने का

भाव यह है कि अपने अंतर में हो रहे शब्द की कमाई करना ही सच्ची शरीअत है, मन के द्वारा सांसारिक, वस्तुओं और इच्छाओं का त्याग सच्ची तरीक़त है । मन को नियंत्रण में करना ही सच्ची मारफत है। परमेश्वर के साथ मिलाप करना जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाना ही सच्ची मुक्ति है ।

20. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 5867 शब्द एवं श्लोक हैं ।

21. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में सबसे अधिक वाणी गुरु अर्जन देव जी (2305 शब्द) हैं ।

22. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में संतों में सबसे अधिक वाणी कबीर दास (537 शब्द और श्लोक) की है ।

23. श्री गुरुग्रंथसाहिब में निम्नलिखित 7 गुरुओं की वाणियां हैं–

1. गुरु नानक देव जी, 2. गुरु अंगद देव जी, 3. गुरु अमर दास जी, 4. गुरु राम दास जी, 5. गुरु अर्जन देव जी, 6. गुरु तेगबहादुर जी, 7. गुरु गोबिन्द सिंह जी ।

24. दस गुरुओं के नाम, जन्म तिथि, जन्म स्थान, निधन तिथि और निधन स्थान निम्नलिखित हैं–

(1) गुरु नानक देव जी सुपुत्र महता कालू जी

जन्मतिथि 15-4-1469 ई., स्थान तलवंडी (ननकाना साहिब) (पाकिस्तान) देहावसान तिथि 22-9-1539 ई., स्थान करतारपुर (पाकिस्तान) ।

(2) गुरु अंगद देव जी सुपुत्र भाई फेरुमल जी

जन्मतिथि 31-3-1504 ई., स्थान मत्ते दी सराय (फरीदकोट) देहावसान तिथि 29-3-1552 ई., स्थान खडूर साहिब, (अमृतसर)

(3) गुरु अमर दास जी सुपुत्र बाबा तेजभान जी

जन्मतिथि 5-5-1479 ई., स्थान बासरके (अमृतसर) देहावसान तिथि 1-9-1574 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर)

(4) गुरु राम दास जी सुपुत्र सोढ़ी हरिदास जी

जन्मतिथि 24-9-1534 ई., स्थान लाहौर (पाकिस्तान) देहावसान तिथि 1-9-1581 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर)

(5) गुरु अर्जन देव जी सुपुत्र गुरु रामदास जी

जन्मतिथि 15-4-1563 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर) देहावसान तिथि 30-5-1606 ई., स्थान लाहौर (पाकिस्तान)

(6) गुरु हरगोविन्द जी सुपुत्र गुरु अर्जन देव जी

जन्मतिथि 19-6-1595 ई., स्थान बडाली (अमृतसर), देहावसान तिथि 3-5-1644 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़)

(7) गुरु हरिराय जी सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी

जन्मतिथि 16-1-1630 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़), देहावसान तिथि 6-10-1661 ई. स्थान कीरतपुर (रोपड़)

(8) गुरु हरि किशन जी सुपुत्र गुरु हरिराय जी

जन्मतिथि 7-7-1656 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़), देहावसान तिथि 30-3-1664 ई. स्थान दिल्ली

(9) गुरु तेग बहादुर जी सुपुत्र हरि गोविन्द जी

जन्म तिथि 1-4-1621 ई., स्थान अमृतसर, देहावसान तिथि 11-11-1675 ई. स्थान दिल्ली

(10) गुरु गोबिन्द सिंह जी सुपुत्र गुरु तेगबहादुर

जन्म तिथि 22-12-1666 ई., स्थान पटना, देहावसान तिथि 7-10-1708 ई., नांदेड़ (महाराष्ट्र)।

25. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का संदेश है कि समूची मानवता को आपसी भाईचारे, सद्भावना, सहानुभूति, प्रेम का वातावरण पैदा करके संतोष, सुख, शांति एवं आनंद उत्पन्न करना। वस्तुतः श्रीगुरुग्रंथसाहिब के सारे संत महात्मा एवं महापुरुष थे और वे सच्ची मानवता का सुधार करना चाहते थे। अतः इसकी शिक्षाएं सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हैं। इसीलिये ही

रामायण, गीता, बाइबल, क़ुरान आदि धार्मिक ग्रंथों की भाँति इस महान् ग्रंथ का आविर्भाव अपने काल की एक ऐतिहासिक घटना है । इसका अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं में होना चाहिए ताकि इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो और संसार के व्यक्तियों का जीवन सुखमय, शांतमय और आनन्दमय हो । अतः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि श्रीगुरुग्रंथसाहिब महापुरुषों का एक अद्‌भुत, अनुपम एवं अमर ग्रंथ है जोकि सारी मानवता के कल्याण के लिए लिखा गया है । यहाँ तक कि सरदार भगत सिंह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह लिखते हैं--

सरदार अर्जन सिंह ने श्रीगुरुग्रंथसाहिब के सौ श्लोक वेद मंत्रों के साथ प्रस्तुत किए जो जैसे थे और सिद्ध किया कि गुरुग्रंथसाहिब के श्लोकों और वेद मंत्रों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक हैं तथा समान रूप से आदर के योग्य हैं ।

11. सत्यार्थप्रकाश

1. ''सत्यार्थप्रकाश'' लिखने की प्रेरणा महर्षि दयानंद को राजा जयकृष्ण दास से मिली थी।
2. ''सत्यार्थप्रकाश'' महर्षि दयानंद ने पं० चन्द्रशेखर से लिखवाया।
3. महर्षि दयानंद को ''सत्यार्थप्रकाश'' लिखने के लिये 2986 ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ा था।
4. महर्षि दयानंद ने 12-6-1874 दिन शुक्रवार को ''सत्यार्थप्रकाश'' लिखना आरंभ किया था और लगभग 3 मास में इसे लिख डाला था।
5. ''सत्यार्थप्रकाश'' में 14 समुल्लास हैं।
6. ''सत्यार्थप्रकाश'' में सबसे छोटा दूसरा समुल्लास और सबसे बड़ा 11वाँ समुल्लास है।
7. ''सत्यार्थप्रकाश'' में 290 ग्रंथों के 1866 प्रमाण उद्धृत किये गये हैं।
8. ''सत्यार्थप्रकाश'' में विभिन्न ग्रंथों के 1542 मंत्र एवं श्लोक उद्धृत किये गये हैं।
9. ''सत्यार्थप्रकाश'' के चौदहवें समुल्लास पर जिसमें क़ुरान के 161 उद्धरणों को लेकर पाखंडों का खंडन किया गया है, कई बार प्रतिबंध लगे। परन्तु आन्दोलनों के बाद ये प्रतिबंध हटा दिये गये थे।
10. महर्षि दयानंद जी का ''सत्यार्थप्रकाश'' लिखने का मुख्योद्देश्य सत्य का प्रकाश करके अंधकार रूपी पाखण्डों को जीवन से भगाना था क्योंकि वे एक महान् समाज सुधारक थे। अतः वे स्वयं ''सत्यार्थप्रकाश'' की भूमिका में लिखते हैं—

मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य का प्रकाश करना है।

इसी कारण यह ग्रंथ 19वीं शताब्दी का सर्वप्रिय ग्रंथ हो गया था।

11. ''सत्यार्थप्रकाश'' का यह महत्त्व है कि स्वाध्याय मात्र से संसार के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य मतों एवं उनके मान्य सिद्धान्तों का परिचयात्मक ज्ञान हो जाता है। तभी डॉ० भवानी लाल भारतीय इसे 'विश्वकोश' के नाम से पुकारते हैं।

12. ''सत्यार्थप्रकाश'' के पहले समुल्लास का सार है कि इसमें परमात्मा के विभिन्न नामों का वर्णन किया गया है क्योंकि परमात्मा के अनंत गुण, कर्म एवं स्वभाव होने के कारण उसके अनेक नाम हैं। परन्तु ओम् उसका निज एवं सर्वश्रेष्ठ नाम है। ओम् के नाम के अतिरिक्त उन्होंने 100 और परमात्मा के नाम बताये हैं।

13. दूसरे समुल्लास का सार है कि इसमें सन्तानों की शिक्षा का वर्णन है और यह भी बताया गया है कि माता-पिता एवं आचार्य ज्ञानवान एवं धार्मिक हो। केवल गणित ज्योतिष वैज्ञानिक एवं सत्य है, न कि फलित ज्योतिष।

14. तीसरे समुल्लास का सार है कि इसमें ब्रह्मचर्य, पठनपाठन व्यवस्था आदि का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि शिक्षा के सबको समान अवसर प्रदान किये जाने चाहियें चाहे वह राजकुमार हो या रंक। माता-पिता, आचार्य और अतिथि को देवता के समान समझकर उनका आदर सत्कार करना चाहिये।

15. चौथे समुल्लास का सार है कि इसमें विवाह और गृहस्थाश्रम का वर्णन है। विवाह, गुण, कर्म और स्वभाव मिलाकर ही करना चाहिये। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रमों का आधार गृहस्थाश्रम है। यदि गृहस्थाश्रम न होता तो संतानोत्पत्ति न होने के कारण कोई भी आश्रम नहीं हो सकता था। अतः जो व्यक्ति गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है।

16. पांचवे समुल्लास का सार है कि इसमें वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रमों का वर्णन है। सिर मुंडा कर काषाय वस्त्र धारण करके एवं दण्ड, कमण्डल हाथ में लेकर कोई व्यक्ति संन्यासी कभी भी नहीं बन सकता जब तक कि वह वितैषणा, पुत्रैषणा एवं लोकैषणा का परित्याग नहीं करता। वस्तुतः सत्य, प्रेम, परोपकार, अनासक्ति आदि गुणों को धारण करके ही व्यक्ति संन्यासी बन सकता है।

17. छठे समुल्लास का सार है कि इसमें राजधर्म का वर्णन है। जिसके अनुसार राजा और जनता दोनों को मिलकर राज्य चलाने के लिये तीन सभाएं बनायें। (1) विद्या आर्य सभा, (2) धर्म आर्य सभा, (3) राज आर्य सभा। राजा को कोई स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। वह इन सभाओं के सभापति होने के कारण इन्ही की सलाह से काम चलाये।

18. सातवें समुल्लास का सार है कि इसमें वेद व ईश्वर विषय का वर्णन है। जब कोई भी व्यक्ति बुरा काम करता है तो परमात्मा की ओर से उसके हृदय में तीन अनुभूतियाँ पैदा होती हैं—भय, शंका और लज्जा और जब वह अच्छा काम करता है तो चार अनुभूतियाँ पैदा होती हैं—मन का प्रफुलित होना, आत्मोत्सर्ग, उत्साह और आनंद। यह सब परमात्मा की ओर से होता है।

19. आठवें समुल्लास का सार है कि इसमें सृष्टि निर्माण, जगत् उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का वर्णन है। प्रकृति सत् है, आत्मा सत्+चित और परमात्मा सत्+चित्+आनन्द है। अतः आनन्द प्राप्ति के लिये आत्मा परमात्मा की खोज करती है। बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। जगत् की उत्पत्ति के तीन कारण हैं—निमित्त, उपादान और साधारण।

20. नवें समुल्लास का सार है कि इसमें विद्या, अविद्या, बंध और मोक्ष की व्याख्या है।

21. दसवें समुल्लास का सार है कि इसमें आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषयों का वर्णन है। यह सदाचार का मूलमंत्र है कि मानव को जितेन्द्रिय होना चाहिये। सदा सत्य एवं प्रिय बोलना चाहिये और जिज्ञासु को तो बिना पूछे ही ज्ञान देना चाहिये।

22. ग्यारहवें समुल्लास का सार है कि महाभारत काल के उपरांत जो विभिन्न पंथ इस देश में चले उनके पाखंडों का खंडन इसमें किया गया है। जैसे वाममार्ग से अश्लील समारोहों में मूर्तिपूजा आदि का खंडन किया गया है। मूर्तिपूजा के स्थान पर पंचायतन पूजा– माता-पिता, आचार्य, अतिथि, पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिये पति पूजनीय है।

23. बारहवें समुल्लास का सार है कि इसमें चार्वाक, बौद्धमत एवं जैनमत के पाखंडों का खंडन है।

24. तेरहवें समुल्लास का सार है कि इसमें बाइबल से 133 विभिन्न उद्धरण लेकर बाइबल के पाखंडों का खंडन किया गया है जोकि सत्य पर पूरे नहीं उतरते हैं।

25. चौदहवें समुल्लास का सार है कि इसमें क़ुरान के 161 उद्धरण लेकर क़ुरान के पाखंडों का खंडन किया गया है जोकि सत्य पर पूरे नहीं उतरते हैं।

अन्ततः उपर्युक्त विवेचन व विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष व निचोड़ पर पहुँचते हैं कि पौराणिक भाई रामायण व गीता को तो मानते हैं परन्तु रामायण व गीता की नहीं मानते। आर्यसमाजी भाई वेद व सत्यार्थप्रकाश को तो मानते हैं परन्तु वेद व सत्यार्थप्रकाश की नहीं मानते। यहूदी, पारसी और अंग्रेज़ भाई बाइबल को तो मानते हैं परन्तु बाइबल की नहीं मानते। मुसलमान भाई क़ुरान को तो मानते हैं परन्तु क़ुरान की नहीं मानते। इसी प्रकार सिख भाई श्रीगुरुग्रंथसाहिब को तो मानते हें परन्तु श्रीगुरुग्रंथसाहिब की नहीं मानते।

अब प्रश्न उठता है कि ये सब किसकी मानते हैं। बहुधा ये सब अपने-अपने मन जिसको मानव शरीर का प्रधानमंत्री कहा जाता है, की मानते हैं। क्योंकि संसार के अधिकतर लोगों ने मन को गुरु बना रखा है। मन को गुरु बनाने की अपेक्षा शिष्य बनाओ। क्योंकि आत्मज्ञान न होने के कारण आत्मा व मन में गांठ पड़ गई है और व्यक्ति ने अपनी इन्द्रियां, मन व बुद्धि को प्रभु में लगाने की अपेक्षा सांसारिक मोहमाया में लगा रखा है। परन्तु जब जीवात्मा और परमात्मा के मध्य से माया भाग जाती है तो उसे आत्मज्ञान होता हैं तब वह अपनी आत्मा की आवाज़ से ही कार्य करने लगता हैं मेरी बहनों और भाइयो! मन की मानोगे तो जीवनभर दुःखी रहोगे। जैसेकि मुनि श्री तरुणसागर जी लिखते हैं–

धर्म प्रश्न है। धर्म ही जवान है। अपने लिये जो औरों से चाहिये वैसा व्यवहार करना ही धर्म है। जो अपने लिये प्रतिकूल लग रहा हो ऐसा व्यवहार दूसरों के लिए मत करो। धर्म का मतलब उन मूल्यों को धारण करना है जो हम चाहते हैं। हम चाहते हैं सुख, आनन्द और शांति। सब खेल समझ का है। समझ से समाज बनता है और समाज से देश।

जैसी समझ होगी वैसा ही देश बनेगा। धर्मयुद्ध में नहीं शुद्ध रूप में सिखाया जाना चाहिये। केवल राजसत्ता से समाज ठीक नहीं हो सकता, उसके लिए धर्मसत्ता भी चाहिये। राजसत्ता शहर का चेहरा तो बदल सकती है लेकिन आदमी का चरित्र नहीं बदल सकती है। चरित्र को बदलने के लिए धर्म चाहिए।

–कड़वे प्रवचन (भाग 5 पृ० 12)

संसार के सब व्यक्तियों को चाहिए कि वे श्रुति की माने यदि श्रुति की नहीं मानते तो स्मृति की माने। यदि स्मृति की नहीं मानते तो महापुरुषों की मानें। यदि महापुरुषों की नहीं मानते तो अपनी आत्मा जिसको मानव शरीर का राष्ट्रपति कहा जाता है की माने तभी व्यक्ति सच्चे अर्थों में मानव बनेगा और

मानवता से प्रेम करेगा । कहने का भाव यह है कि बहुधा व्यक्ति कहता कुछ है और कर्ता कुछ है । व्यक्ति की करनी-कथनी, चर्चा-चर्या एवं उच्चारण-आचरण में अंतर है । वस्तुतः हम उपदेश देते हैं टन भर, उपदेश सुनते हैं मन भर और अमल करते हैं कण भर । इसलिये किसी ने सत्य ही कहा है कि संसार का सबसे बड़ा उपदेशक वह है जो स्वयं को उपदेश देता है । परन्तु जो व्यक्ति, मन, वचन और कर्म से एक होता है वह वस्तुतः सच्चा महात्मा होता है । संसार में ऐसे महात्मा बहुत कम देखने को मिलते हैं । यहाँ तक कि बड़े-बड़े उपदेशकों का भी यही हाल है । क्या वे जो उपदेश करते हैं? क्या वे उसे आचरण में भी उतारते हैं? यदि उतारते हैं तो मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ यदि नहीं तो मुझे उनके हाल पर अफसोस होता है । जैसे तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं–

पर उपदेश कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।

–लंकाकाण्ड 77.1

इसी प्रकार उर्दूशायर इकबाल भी फरमाते हैं–

इक़बाल बड़ा उपदेशक है, मन बातों से मोह लेता है ।
गुफ़्तार का ग़ाज़ी तो बना, किरदार का ग़ाजी बन न सका ।।

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी ।
ये ख़ाकी अपनी फ़ितरत से न नूरी न नारी है ।

एक हिन्दी कवि के शब्दों में –

है मानवता से अधिक बड़ा जग में कोई भी धर्म नहीं ।
वह अज्ञानी मानवता का जो समझ सका है मर्म नहीं ।
जब अपने और पराये की लक्ष्मण रेखा मिट जायेगी ।
जब मानवता वसुधा से ही अपना परिवार बनाती है ।
तब शांतिपूर्ण होता विकास धरती तल पर मानवता का ।
अस्तित्व स्वयं मिटने लगता अन्याय अनल दानवता का ।।

12. सामान्य ज्ञान

(1) इतिहास

1. जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए जिनका विवरण निम्नलिखित है–

   (1) ऋषभदेव, (2) अजितनाथ, (3) सम्भवनाथ, (4) अभिनन्दन, (5) सुमति नाथ, (6) पद्म प्रभु, (7) सुपार्श्वनाथ, (8) चन्द्रप्रभु, (9) सुविधिनाथ, (10) शीतलनाथ, (11) श्रेयांसनाथ, (12) वासुपूज्य, (13) विमलनाथ, (14) अनन्तनाथ, (15) धर्मनाथ, (16) शान्तिनाथ, (17) कुन्थुनाथ, (18) अरनाथ, (19) मल्लिनाथ, (20) मुनि सुब्रत, (21) नेमिनाथ, (22) अरिष्टनेमि, (23) पार्श्वनाथ, (24) महावीर।

2. मोहम्मद बिन कासिम, भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरब मुस्लिम था जिसने सिन्ध व मुलतान को 712 ई० में विजय किया। उस समय सिंध का शासक ब्राह्मणवंशी राजा दाहिर था।

3. आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठ निम्नलिखित हैं–

(1)	ज्योतिष्पीठ	बद्रीनाथ (उत्तरांचल)
(2)	गोवर्धनपीठ	पुरी (उड़ीसा)
(3)	शारदापीठ	द्वारिका (गुजरात)
(4)	शृंगेरीपीठ	मैसूर (कर्नाटक)

4. अकबर के दरबार के नौ रत्न निम्नलिखित थे।

   (1) तानसेन – इनका मूल नाम राम तनु पांडे था। इनका जन्म बेहटठ नामक गांव में हुआ था। मियां तानसेन महान् संगीतज्ञ थे।

   (2) बीरबल – इनका मूल नाम महेश दास था। यह ओरछा गांव के ब्राह्मण थे। हाजिर जवाब, संकट मोचक तथा अकबर के सलाहकार थे। ये परम बुद्धिमान कहे जाते हैं। इनके अकबर के संग किस्से कहानियाँ आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

   (3) मानसिंह – यह अकबर के सेनापति थे। अकबर मान सिंह

का फूफा था। इनकी बुआ जोधाबाई अकबर की पटरानी थी।

(4) टोडरमल – अकबर से पूर्व शेरशाह के समय इन्होंने लगान संबंधी सुधार कर ख्याति प्राप्त की। अकबर ने इन्हें दीवाने अशरफ के पद पर नियुक्त किया।

(5) अब्दुर्रहीम खानखाना – यह बैरम खां के पुत्र थे। यह फारसी भाषा के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में भी कई दोहे लिखे। आपने बाबरनामा का अनुवाद तुर्की से फारसी में किया।

(6) हकीम हुमाम – यह अकबर के हकीम थे।

(7) अबुल फजल – इन्होंने आइने-अकबरी तथा अकबरनामा की रचना की।

(8) शेख फैजी – अबुल फजल का बड़ा भाई था। इन्होंने लीलावती ग्रंथ का फारसी में अनुवाद किया।

(9) मुल्ला दो प्याजा – यह भी साहित्यकार थे।

5. तराईन की दूसरी लड़ाई 1192 ई० में मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली और अजमेर पर कब्जा कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य की नींव डाली थी। अतः मोहम्मद गौरी को ही भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है। इस प्रकार 1192 ई० से लेकर 1757 ई० तक मुसलमानों ने (565 वर्ष) भारत वर्ष पर राज किया। इसी प्रकार 1757 ई० में प्लासी की लड़ाई में लार्ड क्लाइव ने बंगाल के सिराजुद्दौला को हराकर भारत में अंग्रेज़ी राज्य की नींव रखी थी। अंग्रेजों ने भारतवर्ष पर 1757 ई० से लेकर 1947 ई० तक राज़ किया। इस प्रकार हमारा देश 15.8.1947 ई० को 755 वर्षों की (565+190=755 वर्ष) परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्र हुआ था।

6. लार्ड विलियम बैंटिक को भारत का प्रथम गवर्नर जनरल का पद सुशोभित करने का गौरव प्राप्त है। 1828 ई० में सती प्रथा का अंत सामाजिक सुधारों में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7. लार्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा अंग्रेज़ी सम्राट् के अधीन नियुक्त भारत के पहले वायसराय थे ।

8. कांग्रेस की स्थापना 1885 ई० में ए०ओ० ह्यूम द्वारा की गई थी । जोकि एक सेवानिवृत अंग्रेज़ प्रशासनिक अधिकारी था । इसका पहला अधिवेशन 27.12.1885 ई० में बम्बई में हुआ जिसकी अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने की ।

9. मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में अध्यक्षता करते हुए मोहम्मद अली जिन्ना ने 23.3.1940 ई० को भारत से अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की मांग की थी ।

(2) भूगोल

1. 21.7.1969 ई० को नील आर्मस्ट्रांग एवं सर एडविन एल्ड्रिन विश्व के पहले अमरीकी व्यक्ति बने जिन्होंने चन्द्रमा की सतह पर अपने कदम रखे । ये अपोलो-11 नामक अंतरिक्ष यान में गये थे ।

2. संसार में 204 देश हैं । पृथ्वी का क्षेत्रफल 19,69,49,970 वर्ग मील है । इसमें धरती 29.08% तथा जलीय भाग 70.92% है ।

3. भारत में पहली रेल 16.4.1853 ई० को मुम्बई और थाणा के बीच 34 किलोमीटर चली थी ।

4. जे०आर०डी० टाटा प्रथम भारतीय थे जिन्होंने 1931 ई० में मुम्बई तक अकेले उड़ान भरी थी ।

5. विश्व में सर्वाधिक बड़ा, ऊँचा और लम्बा निम्नलिखित है–
   (1) एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है ।
   (2) ऑस्ट्रेलिया सबसे छोटा महाद्वीप है ।
   (3) प्रशांत महसागर सबसे बड़ा महासागर है ।
   (4) आर्कटिक महासागर सबसे छोटा महासागर है ।
   (5) पामीर का पठार सबसे ऊँचा पठार है ।
   (6) एण्डीज (दक्षिणी अमेरिका) सबसे लम्बी पर्वतमाला है ।
   (7) हिमालय (एशिया) सबसे ऊँची पर्वतमाला है ।

(8) माउंट ऐवरेस्ट (नेपाल) सबसे ऊँची पर्वतचोटी है ।

(9) चीन की दीवार सबसे लम्बी दीवार है ।

(10) पोर्ट ऑफ शंघाई (चीन) सबसे व्यस्त बंदरगाह है ।

(11) सहारा (अफ्रीका) सबसे बड़ा रेगिस्तान है ।

(12) बुर्ज खलीफा (संयुक्त अरब अमीरात) सबसे ऊँची इमारत है ।

(13) गोवी (मंगोलिया) एशिया का सबसे बड़ा मरुस्थल है ।

(14) रूस क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है ।

(15) चीन जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है ।

(16) अकोरवाट का मंदिर (कम्बोडिया) सबसे विशाल मंदिर है ।

(17) प्रशांत महासागर सबसे गहरा महासागर है ।

(18) ट्रांस साइबेरियन रेलमार्ग (रूस) सबसे बड़ा रेलमार्ग है ।

(19) कनाडा सर्वाधिक लम्बी सीमा वाला देश है ।

(20) कैस्पियन सागर सबसे बड़ी खारे पानी की झील है ।

(21) इण्डोनेशिया विश्व का सबसे बड़ा द्वीप समूह है ।

(22) शंघाई सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर है ।

(23) अरब का प्रायद्वीप सबसे बड़ा प्रायद्वीप है ।

(24) गोरखपुर (उ.प्र.) भारत सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफार्म है ।

(25) ग्रेंड सेन्ट्रल टर्मिनल (न्यूयार्क) सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है ।

(26) सुन्दरवन (भारत-बांग्लादेश) सबसे बड़ा डेल्टा है ।

(27) गावर फील्ड (सऊदी अरब) सबसे विशाल खनिज तेल क्षेत्र है ।

(28) काशीवाज की करीवा (जापान) सबसे बड़ा परमाणु रिएक्टर है ।

(29) मोनालोआ (हवाई द्वीप) सबसे विशाल ज्वालामुखी है ।

(30) ओजोस डेल सालाडो (दक्षिणी अमेरिका) सर्वाधिक ऊँचा ज्वालामुखी है ।

(31) बेंगडा हवाई अड्डा (तिब्बत) सर्वाधिक ऊँचा हवाई अड्डा है ।

(32) बर्खोयास्क (साइबेरिया) सबसे ठण्डा प्रदेश है ।

(33) अलअजीजिया (लीबिया) सबसे गर्म प्रदेश है ।

(34) जामा मस्जिद (दिल्ली) भारत सबसे बड़ी मस्जिद है ।

(35) कुतुबमीनार (भारत) सबसे ऊँची मीनार है ।

(36) चीन सर्वाधिक सीमाओं वाला (13 देशों की सीमाएं) देश है ।

(37) ट्रांस कैनेडियन राजमार्ग सबसे बड़ा राजमार्ग है ।

(38) लापाज (बोलविया) सबसे ऊँची राजधानी है ।

(39) बंग ना एक्सप्रैसवे (थाईलैंड) सबसे लंबा सड़क पुल है ।

(40) डनयांग-कुनशाग ग्रैंड ब्रिज (चीन) सबसे लंबा रेल पुल है ।

(41) सीकन रेल सुरंग (जापान) सबसे बड़ी रेल सुरंग है ।

(42) लेह-मनाली मार्ग (भारत) सबसे ऊँची सड़क है ।

(43) मासिनराम (मेघालय) भारत सबसे अधिक वर्षा का स्थान है ।

(44) दक्षिण चीन सागर सबसे बड़ा सागर है ।

(45) राइन नदी (जर्मनी) सबसे व्यस्त व्यापारिक नदी है ।

(46) स्वेज नहर (मिस्र) सबसे बड़ी नहर है ।

(47) शाह खालिद हवाई अड्डा (सऊदी अरब) सबसे बड़ा हवाई अड्डा है ।

(48) पेन्टागन (सं.रा. अमेरिका) सबसे बड़ी कार्यालय इमारत है ।

(49) हमिंग बर्ड सबसे छोटा पक्षी है ।

(50) जिराफ सबसे ऊँचा पशु है ।

(51) नीली व्हेल सबसे विशालकाय पशु है ।

(52) कांग्रेस का पुस्तकालय (यू.एस.ए.) सबसे बड़ा पुस्तकालय है ।

(53) माजुली (ब्रह्मपुत्र नदी) भारत सबसे बड़ा नदी द्वीप है ।

(54) ग्रेट बैरियर रीफ (आस्ट्रेलिया) सबसे बड़ी मूंगे की चट्टान है ।

(55) थ्री मार्जिस बांध (चीन) सबसे बड़ी पन-बिजली परियोजना है ।

6. भारत में सर्वाधिक बड़ा, लंबा और ऊँचा निम्नलिखित है–

(1) महात्मा गांधी सेतु (पटना) सबसे लम्बा सड़क पुल है ।

(2) सोनपुर (बिहार) सबसे बड़ा पशुओं का मेला लगता है ।

(3) भाखड़ा नंगल बांध (पंजाब) सबसे ऊँचा बांध है ।

(4) थार (राजस्थान) सबसे बड़ा रेगिस्तान है ।

(5) कैलाश मन्दिर (एलोरा) सबसे बड़ा गुफा मन्दिर है ।

(6) गॉडविन ऑस्टिन सबसे ऊँची चोटी है ।

(7) पीर पंजाल सुरंग (जम्मू-कश्मीर) सबसे लम्बी सुरंग है ।

(8) सुन्दरवन सबसे बड़ा डेल्टा है ।

(9) मध्य प्रदेश सबसे अधिक वनों का राज्य है ।

(10) रामेश्वर मंदिर सबसे बड़ा कॉरीडोर है ।

(11) कुंचीकल (कर्नाटक) सबसे ऊँचा जलप्रपात है ।

(12) ग्रांट ट्रंक रोड सबसे लम्बी सड़क है ।

(13) बुलन्द दरवाजा सबसे ऊँचा दरवाजा है ।

(14) गंगा नदी सबसे लम्बी नदी है ।

(15) कोलकाता अजायब घर सबसे बड़ा अजायबघर है ।

(16) गोल गुम्बज (बीजापुर) सबसे बड़ा गोल गुम्बज है ।

(17) ऋषभ देव की 108 फुट ऊँची मूर्ति मांगीतुंगी, नासिक महाराष्ट्र में है जिसका नाम गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस में दर्ज हो चुका है ।

(18) हावड़ा ब्रिज, कोलकाता सबसे बड़ा लीवर पुल है ।

(19) इन्दिरा गाँधी नहर (राजस्थान) सबसे लम्बी नहर है ।

(20) मुंबई सबसे अधिक आबादी वाला शहर है ।

(21) महाराष्ट्र सर्वाधिक शहरी क्षेत्र वाला राज्य है ।

(22) मुम्बई सबसे बड़ी प्राकृतिक बन्दरगाह है ।

(23) सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 7 (वाराणसी से कन्याकुमारी तक) है ।

(24) गुजरात सबसे लम्बी तट रेखा वाला राज्य है ।

(25) देवताल झील (उत्तराखंड) सबसे ऊँची झील है ।

(26) चिल्का झील (ओडिशा) खारे पानी की सबसे बड़ी झील है ।

(27) वूलर झील (कश्मीर) मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है ।

(28) भारत रत्न भारत का सर्वोच्च सम्मान पदक है ।

(29) परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च शौर्य सम्मान है ।

(30) स्वर्णमन्दिर (अमृतसर) सबसे बड़ा गुरुद्वारा है ।

(31) सेंट कैथेडरल (गोआ) सबसे बड़ा गिरजाघर है ।

(32) पीतमपुरा (नई दिल्ली) सबसे ऊँचा टी.वी. टावर है ।

(33) मेरीना बीच (चेन्नई) सबसे लम्बा समुद्र तट है ।

(34) सियाचीन ग्लेशियर सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित युद्ध स्थल है ।

(3) भारतीय राजव्यवस्था

देश में वरीयता अनुक्रम (Protocol)

1. राष्ट्रपति
2. उपराष्ट्रपति
3. प्रधानमंत्री
4. राज्यों के राज्यपाल अपने-अपने राज्य में

5. भूतपूर्व राष्ट्रपति

6. उप-प्रधानमंत्री

7. भारत के मुख्य न्यायाधीश, लोकसभा के अध्यक्ष

8. केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के मंत्री, राज्यों के मुख्यमंत्री अपने-अपने राज्य में उपाध्यक्ष, योजना आयोग, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, राज्यसभा और लोकसभा में विपक्ष के नेता ।

9. भारत रत्न से सम्मानित व्यक्ति

10. भारत स्थित विदेशों के असाधारण, पूर्णाधिकारी राजदूत तथा राष्ट्रमण्डल देशों के उच्चायुक्त, राज्यों के मुख्यमंत्री अपने-अपने राज्य से बाहर, राज्यों के राज्यपाल अपने-अपने राज्य से बाहर ।

11. उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश

12. मुख्य निर्वाचन आयुक्त

    भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक

13. राज्य सभा के उप-सभापति

    राज्यों के उप-मुख्यमंत्री

    लोकसभा के उपाध्यक्ष

    योजना आयोग के सदस्य

    केन्द्र के राज्यमंत्री और रक्षा मंत्रालय के रक्षा संबंधी मामलों के लिए कोई अन्य मंत्री ।

14. भारत के महान्यायवादी (एटार्नी जनरल), मंत्रिमण्डलीय सचिव, उप-राज्यपाल अपने-अपने केन्द्रशासित प्रदेशों में ।

15. जनरल अथवा उनके समान रैंक वाले सेनाध्यक्ष ।

16. भारत स्थित विदेश के असाधारण दूत तथा पूर्णाधिकारी मंत्री ।

17. राज्यों के विधानमंडलों के सभापति और अध्यक्ष अपने-अपने

राज्य में, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश अपने-अपने क्षेत्राधिकार में ।

18. राज्यों के मंत्रिमण्डल स्तर के मंत्री अपने-अपने राज्य में, केन्द्रशासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री और दिल्ली के मुख्य कार्यकर्ता पार्षद अपने-अपने केन्द्र शासित प्रदेशों में, केन्द्र के उप-मन्त्री ।

19. लेफ्टिनेंट जनरल अथवा उनके समान रैंक वाले स्थानापन्न सेनाध्यक्ष ।

20. केन्द्रीय प्रशासनिक ट्रिव्यूनल के अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं उपजाति आयोग के अध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश अपने-अपने क्षेत्राधिकार के बाहर, उच्च न्यायालयों के अवर न्यायाधीश अपने-अपने क्षेत्र में ।

21. राज्यों के कैबिनेट मंत्री अपने-अपने राज्य से बाहर, राज्यों के विधानमंडल के सभापति और अध्यक्ष अपने-अपने राज्य से बाहर, एकाधिकार और निर्बन्धन व्यापारिक व्याहार आयोग के अध्यक्ष, राज्य विधानमंडल के उप-सभापति तथा उपाध्यक्ष अपने-अपने राज्य में, राज्यों के राज्यमंत्री अपने-अपने राज्य में आदि ।

22. बिना मंत्रिपरिषद् वाले केन्द्रशासित प्रदेशों के मुख्यायुक्त अपने-अपने केन्द्रशासित प्रदेशों में, राज्य के उप-मंत्री अपने-अपने राज्य में, केन्द्रशासित प्रदेशों की विधान सभाओं के उपाध्यक्ष और दिल्ली महानगर परिषद् के उप-सभापति अपने-अपने केन्द्रशासित प्रदेशों में ।

23. राज्यों के विधानमंडलों के उप-सभापति तथा उपाध्यक्ष अपने-अपने राज्यों से बाहर, राज्यों के राज्यमंत्री अपने-अपने राज्य से बाहर। उच्च न्यायालयों के अवर न्यायाधीश अपने-अपने क्षेत्राधिकार से बाहर ।

24. संसद सदस्य ।

25. राज्यों के उपमंत्री अपने-अपने राज्य से बाहर ।

26. आर्मी कमाण्डर/उप-थल सेनाध्यक्ष अथवा अन्य सेवाओं में उसके समान पद वाले अधिकारी, राज्य सरकारों के मुख्य सचिव अपने-अपने राज्य में ।

भाषायी अल्पसंख्यकों का आयुक्त, अल्पसंख्यक आयोग के सचिव, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के सचिव, राष्ट्रपति के सचिव, प्रधानमंत्री के सचिव, सचिव राज्यसभा/लोकसभा आदि ।

27. लेफ्टिनेंट जनरल के रैंक के अथवा उसके समान रैंक वाले अधिकारी ।

28. भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव, एडीशनल सॉलिसिटर जनरल, राज्यों के महाधिवक्ता ।

स्थायी एवं अस्थायी कार्यदूत (चार्ज डी अफेयर्स) तथा स्थानापन्न उच्चायुक्त, केन्द्रशासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री और दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद अपने-अपने केन्द्रशासित प्रदेशों से बाहर, राज्य सरकारों के मुख्य सचिव अपने-अपने राज्य में, उपनियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक (डिप्टी कंट्रोलर एवं आडिटर जनरल) ।

(4) सामान्य विज्ञान

1. मानव शरीर

1. मानव शरीर में अस्थियों की कुल संख्या 206 है ।
2. सबसे छोटी अस्थि का नाम स्टेपिज (मध्य कर्ण में) है ।
3. सबसे लम्बी अस्थि का नाम फीमर (जंघा में) है ।
4. कशेरुकाओं (रीढ़ की हड्डी के मनके) की कुल संख्या 33 है ।
5. पेशियों की कुल संख्या 639 है ।
6. सबसे लम्बी पेशीय सारटोरियस है ।
7. बड़ी आन्त की लम्बाई 1.5 मीटर है ।
8. पुरुषों में यकृत का भार 1.4 से 1.8 कि.ग्रा. होता है ।

9. महिलाओं में जिगर का भार 1.2 से 1.4 कि.ग्रा. होता है ।
10. सबसे बड़ी ग्रंथि जिगर है ।
11. सर्वाधिक पुर्नरूदभवन की क्षमता यकृत में है ।
12. सबसे कम पुर्नरूदभवन की क्षमता मस्तिष्क में है ।
13. शरीर का सबसे कठोर भाग दांत का इनेमल होता है ।
14. सबसे बड़ी लार ग्रंथि पैराटिड ग्रंथि है ।
15. शरीर का सामान्य तापमान 98.4 डिग्री फार्नहाइट होता है ।
16. शरीर में रक्त की मात्रा 5.5 लीटर होती है ।
17. हीमोग्लोबिन (HB) की मात्रा पुरुषों में 13-16 g/dl है ।
18. हीमोग्लोबिन (HB) की मात्रा स्त्रियों में 11.5-14 g/dl है ।
19. WBCS की संख्या 5000-10000 / cu mm.
20. रक्त का धक्का बनने का समय 3-6 मिनट है ।
21. सर्वग्राही रक्त वर्ग AB है ।
22. सर्वदाता रक्त वर्ग O है ।
23. सामान्य रक्त दाब 120/80 Hg है ।
24. सामान्य नाड़ी गति व्यस्क में 70 बार प्रति मिनट है ।
25. हृदय गति 72 बार प्रति मिनट है ।
26. सबसे बड़ी शिरा इन्फिरीयर वेनाकेवा है ।
27. सबसे बड़ी धमनी एब्डोमिनल एरोटा है ।
28. गुरदे का भार 150 ग्राम है ।
29. मस्तिष्क का भार 1.2 से 1.4 कि.ग्रा. है ।
30. मेरुदण्ड की लम्बाई 42 से 45 सें.मी. है ।
31. सबसे लम्बी तंत्रिका सिऐटिक है ।
32. सबसे पतली एवं छोटी तंत्रिका टोक्लियर है ।
33. सबसे बड़ी तंत्रिका ट्राइजिमिनल है ।
34. सबसे बड़ी कोशिका तन्त्रिका कोशिका है ।
35. सबसे बड़ी अन्तःस्रावी ग्रंथि पिट्युटरी ग्रंथि है ।

2. दंत विन्यास

1. बच्चे में दांतों की संख्या 20 होती है ।
2. व्यक्ति में दांतों की संख्या 32 होती है ।
3. घोड़े में दांतों की संख्या 44 होती है ।
4. कुत्ते में दांतों की संख्या 42 होती है ।
5. गाय तथा भेड़ में दांतों की संख्या 32 होती है ।
6. बिल्ली में दांतों की संख्या 30 होती है ।
7. खरगोश में दांतों की संख्या 28 होती है ।
8. चूहा में दांतों की संख्या 16 होती है ।

3. रक्त समूह

1. रक्त समूह की खोज कार्ल लैडस्टीनर ने1900 ई० में की थी । इसके लिए इन्हें सन् 1930 ई० में नोबेल पुरस्कार मिला ।
2. मनुष्यों के रक्तों की भिन्नता का कारण लाल रक्त कण (RBC) में पाई जाने वाली ग्लाइको प्रोटीन है, जिसे एण्टीजन कहते हैं ।
3. एण्टीजन दो प्रकार के होते हैं–एण्टीजन A तथा एण्टीजन B ।
4. एण्टीजन या ग्लाइको प्रोटीन की उपस्थिति के आधार पर मनुष्य में चार प्रकार के रक्त वर्ग होते हैं–

   जिनमें एण्टीजन A होता है – रक्त वर्ग A

   जिनमें एण्टीजन B होता है – रक्त वर्ग B

   जिनमें एण्टीजन A एवं B होता है – रक्त वर्ग AB

   जिनमें दोनों में से कोई एण्टीजन नहीं होता है – रक्त वर्ग O
5. किसी एण्टीजन की अनुपस्थिति में एक विपरीत प्रकार की प्रोटीन रक्त प्लाज्मा में पाई जाती है । इसको एण्टीबॉडी कहते हैं । यह भी दो प्रकार का होता है । एण्टीबॉडी a एवं एण्टीबॉडी b
6.

रक्त वर्ग	एण्टीबॉडी (प्लाज्मा में)
A	केवल b
B	केवल a
AB	कोई नहीं
O	a व b दोनों

4. वनस्पति शास्त्र से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

1. सबसे बड़ा आवृत्तबीजी वृक्ष युकेलिप्टस है ।
2. संसार में सबसे लम्बा वृक्ष सिकोया है । इसकी ऊँचाई 120 मी. है ।
3. सबसे छोटा पौधा जलीय आवृत्तबीजी है जो भारत में भी पाया जाता है ।
4. सबसे बड़ा फल लोडोसिया है । इसे डबलकोकोनेट भी कहते हैं ।
5. सबसे छोटा जलीय पादप टेरिडाफाइटा एजोला है ।
6. सबसे छोटे बीज ऑर्किड है ।
7. सबसे छोटा पुष्प वुल्फिया है ।
8. सबसे बड़ा पुष्प रैफ्लेशिया ओरनोल्डाई है ।
9. सबसे छोटा आवृत्तबीजी आरसीथोबियस है जो नग्न बीजियों के तने पर पूर्ण परजीवी है ।
10. सबसे बड़ा नरयुग्म साइकस एक नग्नबीजी पादप है ।
11. सबसे छोटे गुणसूत्र शैवाल में पाये जाते हैं ।
12. कॉफी देने वाला पौधा कोफिया अरेबिका है ।
13. कोको देने वाला पौधा थियोब्रोमा है ।

(5) सामान्य ज्ञान

1. विश्व में प्रथम

1. एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने वाला पहला व्यक्ति शेरपा तेजिंग तथा सर एडमंड हिलेरी है ।
2. उत्तरी ध्रुव पर पहुँचने वाला पहला व्यक्ति रॉबर्ट पियरी है ।
3. दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाला प्रथम व्यक्ति एमण्डसेन है ।
4. साहित्य के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रेने एफ० ए० सुल्ली प्रघोम हैं ।
5. शान्ति के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता जीन एफ० ड्यूनोट एवं फ्रेडरिक पैसी हैं ।

6. चिकित्सा के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता ए०ई० चान बेहरिंग है ।
7. भौतिकी के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता डब्ल्यू०ए० रोएंटजन है ।
8. रसायन के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता जे० एच० वैंटहॉफ हैं ।
9. अर्थशास्त्र के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रैगनर फ्रिश एवं जॉन टिनबर्जेन हैं ।
10. भूमिगत मेट्रो रेलवे आरंभकर्ता प्रथम देश ब्रिटेन है ।
11. बैंक नोट जारीकर्ता प्रथम देश स्वीडन है ।
12. काग़ज़ी मुद्रा जारी करने वाला पहला देश चीन है ।
13. संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन है ।
14. ब्रिटेन के प्रथम प्रधानमंत्री रॉबर्ट वालपोल है ।
15. संयुक्त राष्ट्र संध का प्रथम महासचिव ट्रिग्वेली नार्वे है ।
16. संविधान निर्माण करने वाला प्रथम देश संयुक्त राज्य अमेरिका है ।
17. भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम यूरोपियन सिकन्दर (326 ई० पूर्व) है ।
18. चीन पहुँचने वाला पहला प्रथम यूरोपियन मार्कोपोलो है ।
19. वायुयान से पहली उड़ान भरने वाला व्यक्ति राईट बन्धु है ।
20. विश्व के चारों ओर समुद्री यात्रा करने वाला प्रथम व्यक्ति फडीनेंड मैगलन है ।
21. आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन करने वाला प्रथम देश यूनान है ।
22. प्रथम नगर जिस पर परमाणु बम गिराया गया हिरोशिमा (जापान) है ।
23. सर्वाधिक पशुओं वाला देश भारत है ।

24. इंग्लैंड की प्रथम महिला प्रधानमंत्री माग्रेट थैचर है ।
25. विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री एस० भण्डारनायके (श्रीलंका) है ।
26. विश्व की प्रथम महिला राष्ट्रपति इसाबेल पेरो (अर्जेण्टीना) है ।
27. अंतरिक्ष में जाने वाली पहली महिला बेलेण्टिना तेरेश्कोवा (रूस) है ।
28. ऐवरेस्ट पर चढ़ने वाला प्रथम महिला जुंको तेबई (जापान) है ।
29. संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्रथम महिला सभापति श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित हैं ।

2. भारत में प्रथम

1. नियमित दशक जनगणना वर्ष 1881 में हुई ।
2. जल विद्युत परियोजना शिव समुद्रम, 1902 में हुई ।
3. समाचार पत्र बंगाल गजट (जेम्स हिक्की) द्वारा प्रकाशित किया गया ।
4. तार लाइन डायमंड हार्बर से कलकत्ता तक (1853) में शुरु हुई ।
5. अंतराष्ट्रीय दूरसंचार सेवा बम्बई से लन्दन तक 1851 में शुरू की गई ।
6. दूरदर्शन केन्द्र, नई दिल्ली 1959 ई० में स्थापित हुआ ।
7. दूरदर्शन से रंगीन कार्यक्रम 15.8.1982 ई० से आरम्भ हुए ।
8. मूक फिल्म राजाहरिश्चन्द्र बनी ।
9. बोलती फिल्म आलमआरा है ।
10. स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल लार्ड लुई माउंटबेटन हैं ।
11. स्वतंत्र भारत के भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य हैं ।
12. भारतीय थल सेना के सेनापति जनरल के०एम० करिअप्पा हैं ।
13. भारतीय थल सेना के फील्ड मार्शल जनरल एम०एच०एफ०जे० मानेक शॉ हैं ।
14. भारत के अंग्रेज़ी गवर्नर जनरल ऑफ बंगाल वारेन हेस्टिंग्ज हैं ।

15. भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा हैं ।
16. भारत के प्रथम आई०सी०एस० सत्येन्द्र नाथ टैगोर हैं ।
17. भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर हैं ।
18. प्रथम भारतीय लोक सभा अध्यक्ष जी०वी० मावलंकर हैं ।
19. भारत के प्रथम मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार नेन हैं ।
20. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के भारतीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति डा० नगेन्द्र सिंह हैं ।
21. सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति हीरा लाल जे० कानिया है ।
22. भारत रत्न से सम्मानित डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य एवं डॉ० सी०वी० रमन हैं ।
23. मरणोपरांत भारत रत्न से विभूषित लाल बहादुर शास्त्री जी हैं ।
24. हृदय प्रत्यारोपण कर्ता सफल सर्जन डॉ० पी० वेणुगोपाल है ।
25. भारत में केन्द्रीय मंत्रीमंडल से परित्याग देने वाला सांसद श्यामा प्रसाद मुखर्जी है ।
26. भारत में सबसे अधिक वोटो से जीतने वाला सांसद पी०वी० नरसिम्हाराव है ।

3. भारत की प्रथम महिला

1. प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी हैं ।
2. इंग्लिश चैनल तैरकर पार करने वाली आरती साहा हैं ।
3. उत्तरप्रदेश की राज्यपाल श्रीमती सरोजिनी नायडू हैं ।
4. प्रथम आई०पी०एस० किरण बेदी हैं ।
5. राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष ऐनी बेसेंट हैं ।
6. संघ लोक सेवा की अध्यक्ष रोज मिलियन बैथ्यू हैं ।
7. नोबेल पुरस्कार विजेता (शान्ति में) मदर टेरेसा हैं ।
8. मिस वर्ल्ड से सम्मानित सुश्री रीता फारिया (1968 ई०) हैं ।
9. मिस यूनिवर्स सुश्री सुष्मिता सेन है ।
10. देश की मेयर सुश्री तारा चेरियन हैं ।
11. केन्द्रीय मंत्रीमंडल में मन्त्री राजकुमारी अमृत कौर हैं ।
12. मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश सुचेता कृपलानी हैं ।

13. सांसद सुश्री राधाबाई सुबारायन (1938) हैं ।
14. सर्वोच्च न्यायालय की न्यायधीश न्यायमूर्ति मीरा साहिब फातिमा बीबी हैं ।
15. उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति लीला सेठ (हिमाचल प्रदेश) हैं ।
16. देश की सत्र न्यायाधीश सुश्री अन्ना चांडी (केरल) हैं ।
17. 'माउंट ऐवरेस्ट' विजेता पर्वतारोही सुश्री बछेन्द्री पाल हैं ।
18. साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता साहित्यकार अमृता प्रीतम (1956) हैं ।
19. 'भारत रत्न' से विभूषित श्रीमती इन्दिरा गांधी हैं ।
20. 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से पुरस्कृत आशापूर्ण देवी (1976) है ।
21. अंटार्कटिका पहुँचने वाली महिला मेहर मूसा (1977) है ।
22. उत्तरी ध्रुव पर पहुँचने वाली महिला प्रीति सेन गुप्ता (1933) है ।
23. मुख्य अभियन्ता महिला पी०के० त्रेसिया नांगुली हैं ।
24. प्रथम पायलट महिला फलाइंग आफिसर सुषमा मुखोपाध्याय हैं ।
25. ओलम्पिक खेलों में भाग लेने वाली खिलाड़ी मेरी लीला रो (1952) है ।
26. भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल हैं ।
27. भारत की प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार है ।
28. ओलम्पिक खेलों में पदक जीतने वाली खिलाड़ी मल्लेश्वरी हैं ।
29. इंजीनियरिंग में स्नातक उपाधि प्राप्तकर्ता इला मजूमदार (1951) है ।
30. रिर्जव बैंक की डिप्टी गवर्नर के०जे० उदेशी (2003) है ।
31. पुलिस महानिदेशक श्रीमती कंचन चौधरी भट्टाचार्य हैं ।
32. लेफ्टिनेंट जनरल श्रीमती पुनीता अरोड़ा है ।
33. विदेश सचिव श्रीमती चोकिला अय्यर हैं ।

34. देश की मुख्य सचिव श्रीमती निर्मला बुच है ।

35. प्रथम अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला (करनाल) है ।

4. संयुक्त राष्ट्र संघ

1. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24.10.1945 ई० को हुई थी ।
2. इसका प्रधान कार्यालय न्यूयार्क में है और इसके सदस्यों की वर्तमान संख्या 193 है ।
3. इसका उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा बनाये रखना है ।
4. राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण सबंध स्थापित करना है ।
5. गरीबी, बीमारी और निरक्षरता को विश्व भर से हटाने के, पर्यावरणीय विनाश को रोकने और प्रत्येक जनसामान्य को अधिकार दिलाने तथा स्वतंत्रता के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करने के लिए एकजुट होकर कार्य करना ।
6. निरस्त्रीकरण और नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्न करना ।
7. संयुक्त राष्ट्र संघ के छः अंग हैं–

   (1) महासभा, (2) सुरक्षा परिषद्, (3) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् (4) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, (5) न्यास परिषद्, (6) सचिवालय ।

(6) मिश्रित ज्ञान

1. परनर्ड मछली पानी में तैरती है भूमि पर चलती है और वायु में उड़ती है ।
2. मछली सोते समय अपनी आँखें बंद नहीं करती है ।
3. लिमिया बिटा टाटा नामक मछली अंडों की अपेक्षा बच्चे देती है ।
4. व्हेल के हृदय का भार 600 से 700 किलोग्राम होता है ।
5. हाथी एकमात्र ऐसा स्तनपायी जन्तु है जिसके चार घुटने होते हैं ।

6. सबसे अधिक चमकने वाला तारा डागस्टार है । इसका प्रकाश सूर्य से 26 गुणा अधिक होता है ।

7. तिब्बत की अऊसलो झील का जल प्रत्येक 12 वर्ष पश्चात् बारी-बारी से खारे मीठे में बदल जाता है ।

8. संसार का सब से ठंडा स्थान अण्टार्टिका का ''पोल ऑफ कोल्ड'' है यहाँ पर तापमान शून्य से 72 डिग्री फारनहीट कम रहता है ।

9. संसार का सब से गर्म इलाका इथोपिया है यहाँ औसतन 94 डिग्री फारनहीट रहता है ।

10. तोता एकमात्र ऐसा पक्षी है जो अपनी ऊपरी एवं निचला जबड़ा मिला सकता है ।

11. जन्म के समय अण्डा हिलता नहीं है ।

12. चट्टान को लोहा तोड़ सकता है, आग लोहे को गला सकती है, पानी आग को बुझा सकता है, वायु जल को सुखा सकता है परन्तु सुदृढ़ संकल्प इन सब से शक्तिशाली होता है जोकि किसी विरले व्यक्ति में ही देखने को मिलता है ।

13. व्यक्ति सामान्यतः अपने दिमाग़ का केवल लगभग 5% ही प्रयोग करता है ।

14. प्रफुल्ल कुमार महंत केवल 33 वर्ष की अल्पायु में असम के मुख्यमंत्री 1985 ई० में बन गये थे । इस प्रकार इन्हें देश के सब से छोटी आयु के मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ था ।

15. टी०वी० के जॉहन बरेड़, मोबाइल के माटीन कूपर, बिजली के बैंजेमीन फ्रेंकलीन, कम्प्यूटर के बैवेज आविष्कारक थे ।

16. ताजमहल के चारों ओर सफेद संगमरमर पर क़ुरान शरीफ की आयतें लिखी हैं ।

17. स्पेन विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहाँ कपड़े पर अखबार निकलता है ।

18. सबसे अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाला पक्षी गिद्ध है और पक्षियों में इसकी आयु सबसे अधिक होती है ।

19. सबसे तेज दौड़ने वाला जानवर चीता है जिसकी औसतन चाल 100 कि.मी. प्रति घंटा है ।

20. बाज की रफ्तार 270 कि.मी. प्रति घंटा है ।

21. दक्षिण अफ्रीका में पाई जाने वाली चिड़िया 'शुगर बर्ड' की पूंछ उसके शरीर से चार गुनी लम्बी होती है ।

22. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 21-3-1929 ई. को अपना ध्वज स्वीकार किया था ।

23. एक मिनट में पृथ्वी अपनी धुरी पर 271 कि.मी. की दूरी तय करती है ।

24. अंग्रेज़ी भाषा का सब से छोटा वाक्य जिसमें सारे वर्ण आ जाते हैं–

    Pack my box with five dozen liquor jugs.

25. अंग्रेज़ी भाषा का सबसे लम्बा शब्द–

    Floccinaucinihilipilyfication है इसका अर्थ है– useless.

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
4. वैदिक गीता
5. अमर धर्मग्रंथ
6. अमर नीतिग्रंथ
7. पुराणपरिचय
8. ईश्वरसिद्धि
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी
10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
11. महावीर हनुमान
12. योगिराज श्रीकृष्ण
13. आदिशंकराचार्य
14. आचार्य चाणक्य
15. दस गुरु
16. आर्यसमाज के महामानव
17. स्वामी रामतीर्थ
18. संस्कार
19. शेर-ओ-शायरी
20. गीतांजलि
21. आर्यसमाज
22. ओ३म्
23. गायत्रीरहस्य
24. ज्ञानामृत
25. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
26. **Great Thoughts**
27. **General English (Part I to V)**
    (For All Classes)